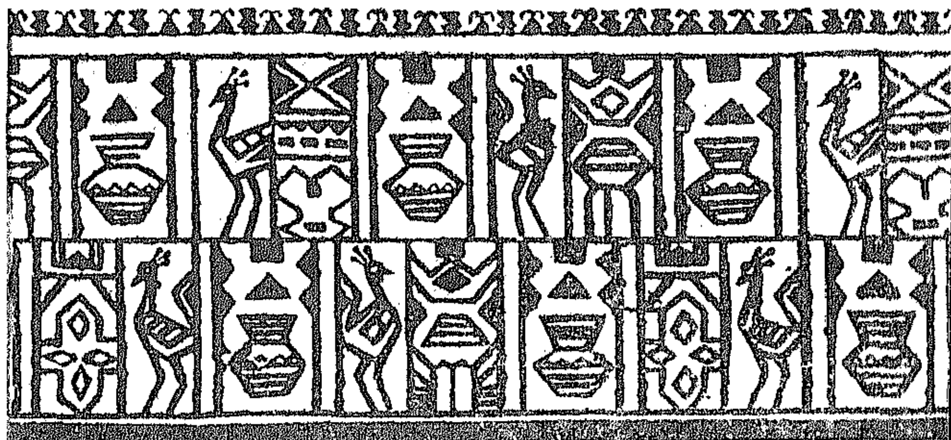
नचिकेता

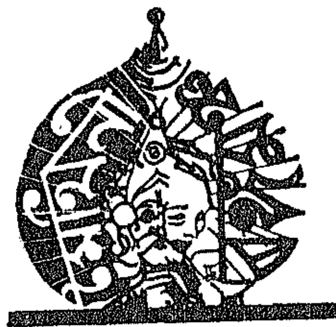
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा



एक छल राजा एक छल राजा
एक छल राजा एक छल राजा

एक छल राजा

नचिकेता



प्रकाशक

मैथिली रंगमंच

१६२/८५/ए०, लेक गार्डेन्स,

कलकत्ता-४५

प्रथम संस्करण :
जुलाई, १९७३ ई०

प्रकाशक :
मैथिली रंगमंच
१६२/८५/ए०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५

मुद्रक :
अजय सिंह
सिंह प्रेस, कलकत्ता-४५

मूल्य :
दू टाका

आमुख

मैथिली रंगमंच मैथिलीक लेल की कैलक औ ?

मैथिली रंगमंच रंगमंचेक लेल की कैलक ?

नहि। ई कहब मिथ्या भाषण हैत जे मैथिली रंगमंच मैथिली कें अपन प्राप्तव्य सम्मान दियैबाक लेल आन्दोलन कैलक, जुलूस निकाललक, नारा लगौलक, ई कैलक, ओ कैलक। ईहो नहि कहि सकैत छी जे मैथिली रंगमंच रंगमंचक दृश्य-सज्जा, व्यवस्थापन, अभिनय-कौशल, आलोक-सम्पात अथवा सुरसंयोजन मे वैल्पविक परिवर्त्तन आनलक अछि।

तखन मैथिली रंगमंच की कैलक औ ?

मैथिली रंगमंच दावा नहि करैत अछि जे ओ मैथिली वा रंगमंचक लेल बहुत कैलक अछि। किन्तु किछु त' अवश्य कैने अछि, कारण, हमरा लोकनि जनैत छी जे मैथिली क आन्दोलन ल' कए नेता लोकनि कतबो कियैक ने कूदथि, ओकर सफलता क लेल प्रयोजन अछि समृद्धिशाली साहित्य-रचना क। और अन्यान्य साहित्यिक विधा जकाँ दृश्य काव्य क महत्त्व सेहो कम नहि छैक। तैं, साहित्यकार लोकनि कें प्रोत्साहन देल गेल अछि नाटक लिखबाक हेतु। नाटक लिखल गेल; और मैथिली रंगमंच नाट्य-विधा क आधुनिक धारा कें आत्मसात करैत ओही नाटक'सभ कें दर्शक क समक्ष उपस्थित कैलक। आइ प्रतिवेशी भाषा-प्रान्त बंगला, हिन्दी और मराठी क रंगमंच जतेक अगुआएल अछि, तकर मूल कारण क अनुसंधान क चेष्टा कैलक एवं ताही रूपें मैथिली नाटक सभ क संरचना एवं प्रस्तुति क' कए देखौलक जे हमहूँ सभ पछुआएल नहि छी। हँ, विलम्ब सँ अवश्य आरम्भ कैने छी। ताहि सँ की ?

मैथिली रंगमंच आइ धरि मैथिली और रंगमंच क उन्नति क हेतु सात गोट नाटक नाट्यामोदी दर्शक लोकनि क समक्ष उपस्थित कैलक अछि—

सुखायल डारि : नव पल्लव, कुहेस, प्रेम : एक कबिता, निष्प्रदीप, आगन्तुक, बेमातर और सन्तान। और एही प्रचेष्टा सँ प्रेरणा ल' कए मिथिला क विभिन्न नाट्य-संस्था एहि नाटक सभ क अभिनय कैलक अछि। मैथिली रंगमंच मात्र अभिनये टा नहि कैलक अछि, एहि मे सँ सुखायल डारि : नव पल्लव, बेमातर, आगन्तुक, क्षमादान आ' सन्तान क प्रकाशन-भार सेहो सम्हारलक अछि। मैथिली रंगमंच एहि दीर्घ समय मे रंगमंच ल' कए जतेक जे परीक्षण चलौलक अछि, तकर सिद्धान्त सब कें जाहि सँ प्रयुक्त कैल जाय, तकर चेष्टा क' रहल अछि। तैं मैथिली रंगमंच एहि बेरि उत्साह देलक एक गोट नव नाट्यकार नचिकेता कें,—कियैक त हुनक नाट्य-रचना मे प्रयोग-वादी भावना क समावेश छन्हि, जकरा ल' कए मैथिली क कोनो नाट्य-संस्था सगर्व अन्यान्य भाषा सम्प्रदायक नाट्य-प्रेमी दर्शक-समालोचक क समक्ष ठाढ़ भ' सकै एवं सार्थक अभिनय सँ मैथिली क नाट्य - विधाक अग्रगति क उद्घोष क' सकै। इच्छानुसार सार्थक नाटक हाथ मे पाबि मैथिली रंगमंच अपन निष्ठाशील अभिनेता - अभिनेत्री सभ कें ल' कए तैं मैथिली नाट्यामोदी दर्शकवृन्द क समक्ष उपस्थित भ' रहल अछि। आ' एकर बाद मैथिली रंगमंच एही प्रकारें नाटक-प्रकाशन तथा अभिनय द्वारा भारतीय नाट्य - साहित्य क श्री-वृद्धि करवा मे दत्तचित्त रहत।

आशा अछि, एहि दिशा मे अपने लोकनि सहृदय पाठक तथा दर्शक क रूप मे हमरा लोकनि कें उत्साह तथा आशीर्वाद प्रदान करब।

विनीत,

मंत्री, मैथिली रंगमंच

पात्र - परिचिति

अभिमान कुमार देव — विलासपुर क भूतपूर्व राजा।

विरंचि — विलासपुर क दीवान।

धनिक लाल — विलासपुर क राजमहल मे प्रतिपालित, किन्तु सम्प्रति शहर क प्रसाद सँ अकस्मात् धन-सम्पन्न।

शुभंकर — शहर क एक प्रोफेसर; मोहिनी क संभावित वर।

चतुर लाल — अभिमान कुमार क खवास।

प्रथम वादक — नाट्य-मंडली क सदस्य।

द्वितीय वादक — ,, ,,

गायक — ,, ,,

घोषक — ,, ,,

सरमा — विलासपुर क रानी।

मोहिनी — विलासपुर क राजकन्या।

पन्नाबाइ — प्रख्यात गायिका।

प्रथम अभिनय रजनी
आन्ध्र एसोसियेशन हॉल, कलकत्ता
८ जुलाई, १९७३ ई०

राजा	—	मोहन चौधरी
विरंचि	—	गौतम भारती
धनिक लाल	—	उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'
शुभंकर	—	रामलोचन ठाकुर
चतुर लाल	—	इन्द्र नारायण मिश्र
प्रथम वादक	—	रत्नाकर
द्वितीय वादक	—	शिशिर दास
गायक	—	श्रीकान्त मंडल
घोषक	—	
सरमा	—	दीपाली चौधरी
मोहिनी	—	चन्द्रकला किरण
पन्नाबाइ	—	

—:※:—

नाट्य-संरचना क अन्यतम उन्नायक

श्री सीताराम झा कें एवं

श्रीमती उर्मिला झा कें

—नचिकेता

एक छल राजा

प्रथम अङ्क

प्रथम दृश्य

[मंच क एक कोन पर अग्रभाग मे वादक-गायक आदि बैसल छथि। ओ सब आत्मविभोर भए कोनो अतिमधुर संगीत क आवृत्ति क' रहल छथि। आलोक केवल हुनकहि लोकनिक ऊपर पड़ैत अछि। मंचक अन्य भाग मे अन्धकार प्रसरित अछि। मंच क पश्च भाग क मध्य मे काठ क एक सुसज्जित उच्चासन राखल अछि। तकर पाछाँ दिसि एकटा चित्रांकित चट टांगल अछि। एकदम पाछाँ दिसि एक करिया पर्दा झूलि रहल अछि। उच्चासन क दुनू दिसि अपेक्षाकृत कम ऊँच मंचिका राखल अछि। एक दिसि एकटा टेबुल लैम्प राखल अछि। नाटक क आरम्भ मे गायक-वादक मंडली क अतिरिक्त और किछु नहि दृष्टि-गोचर भ' रहल अछि।]

गायक—हे जग, तोहर दोष हजार
गुण तोहर जौं सैयो होमय
अवगुण अपरम्पार
हे जग, तोहर दोष हजार

प्रथम वादक—[यन्त्र-वादन स्थगित करैत] नहि, बहुत भेल, आब बन्द करू।

गायक—[उदास भ' कए] अरे, अहूँ अजब छी ! बिच्चहि मे बाजा बन्द क' देलहुँ।

प्रथक वादक—रिहर्सल क प्रयोजने नहि अछि। एकाध बेर भेल थोड़बे ? तकर अलावे आब नाटक आरम्भ हैत।

गायक—से जखन हैत, हैत।

प्रथम बादक—जखन हैत, हैत नहि; देखू ने, पाछाँ पर्दो टांगल भ' गेल छैक। आब नाटक आरम्भ होयबा मे जे देरी होइक।

गायक—से त ठीके। समय त भ' गेल।

प्रथम वादक—और दर्शको सब अगुता गेल छथि। देखैत नहि छिय्रैक ?

गायक—[दर्शक-वृन्द पर दृष्टिपात करैत] हँ; से त देखिये रहल छी। अगुतैता कियैक नहि ?

द्वितीय वादक—[कनेक खौंझाइत] कियैक अगुतायल छथि ओ लोकनि ?

प्रथम वादक—अरे, चुप रह मूर्ख, अगुतैता नहि ? राति कि कम भेलैक अछि ?

गायक—नहि-नहि, सेह टा नहि। नाटको छैक सेहने।

द्वितीय वादक—केहन ?

गायक—[द्वितीय वादक दिसि ध्यान नहि दैत] पहिने त नामे सँ लोक मुग्ध भ' जाइत अछि...... —"एक छल राजा"। कहू त, एहन आधुनिक नाम !

द्वितीय वादक—[अपाटक-बकलेल जकाँ हँसैत] हे, हे ! आधुनिक ! [जेना किछु मजेदार संवाद हो]।

प्रथम वादक—[मुँह दुसैत] हे, हे ! [संगहि संग द्वितीय वादक चुप भ' जाइछ] तों आधनिकता की बुझैत हैं रौ ? कह त, नाट्यकार के छथि ?

द्वितीय वादक—[सप्रतिभ भ' कए] नाट्यभार ?

प्रथम वादक—नाट्यभार नहि रौ, नाट्यकार।

द्वितीय वादक—[हँसबाक चेष्टा करैत] हँ, हँ, सैह त; नट्टकार। [चालाक

बनबाक चेष्टा करैत] नट्टकार। माने...... [हाथ डोलबैत] माने... नाट्टकार।

प्रथम वादक—हम तोरा सँ नाट्यकार शब्द क अर्थ नहि पुछलियौक! [कनेक चुप्पीक पश्चात्] ई नाटक ककर लिखल थिकैक ?

द्वितीय वादक—[माथक केश नोचैत] सैह त...... [गायक कें] ककर लिखल थीक ?

गायक—नचिकेता क!

द्वितीय वादक—नचिकेता क। ओ! जनिक आन नाटक मे हम तबला बजौने छलहुँ...... तबला— [कहब शुरू करैछ उत्साह सँ, मुदा प्रथम वादक क आँखि मे क्रोधाभास देखैत वाक्य बिसरि जाइछ आ' हाथ सँ मात्र तबला पिटबाक अभिनय करैत हास्य क परिवेश ल' आनैत अछि।]

गायक—[हँसैत] खैर, तोरा आब नाट्यकार क गुण क बखान नहि करै पड़तौक। तों तबला पीट, ता हम एक बेर रिहर्सल द' ली।

प्रथम वादक—[पुनः यन्त्र बजैबाक उपक्रम करैत अछि] हँ, शुरू करू।

गायक—[गीत शुरू करैत छथि—]

हे जग, तोहर दोष हजार
गुण तोहर जौं सैयो होमय
अबगुण अपरम्पार
हे जग, तोहर दोष हजार

घोषक—[एतबहि मे धड़फड़ायल मंच क सीढ़ी सँ मंच पर चढ़ैत] अरे! बन्द करह, बन्द करह ई तमाशा!

गायक—[सबहक चुप हैबाक पश्चात्] कियैक ?

घोषक—कहैत छियह बाद मे। घर जाइत - जाइत कहबह! देखियह, माइक देखियह! [माइक घिसियाबैत, तकरा ऊँच क' कए रूमाल सँ

मुंह पोंछि] साफ करब ! रिहर्सल क बीच मे आबि कए हम बाधा देलहुँ । तैं हम क्षमा - प्रार्थी छी । [हाँफैत - हाँफैत] अपने सब कें हम जे दुस्संवाद द' रहल छी ताहि सँ हमरे टा नहि, सब कें दुःख हैत। [कनेक चुप होइत] एखनहि हमरा खबरि भेंटल जे राजा अभिमान कुमार देव क स्वर्गवास भ' गेलन्हि अछि। [दर्शक मंडली मध्य सँ शोक - सूचक ध्वनि उठल। 'कहिया', 'कोना' आदि शब्द सुनबा मे आबै लागल] सब किछु कहैत छी। कने धैर्य राखू। अहाँ सब जनिते छी। एहि देस - कोसक अधिकांश लोक हिनका जनैत छथि। ओ केवल अपनहि स्थानक संस्था आ संघ सभ क नहि, वरंच बहुतो ठामंक संघ - सोसाइटी क सक्रिय सदस्य रहथि। हुनका सन महान आ' उदार हृदय क व्यक्ति आजुक युग मे भेटब दुर्लभ अछि। तैं आउ, हम सब पहिने हुनक आत्मा क चिर शान्ति क लेल एक मिनट धरि नीरवता क पालन करी।

[दर्शक - वृन्द मे सँ किछु गोटे ठाढ़ भए मौन प्रार्थना करैत छथि। देखैत - देखैत सब क्यो ठाढ़ भ' जैताह।] हँ; आब सब क्यो बैसि सकैत छी। एखन पहिने हुनक आत्मा क शान्ति क लेल आजुक नाटक क गवैया श्री गुलाबजी कें हम एकटा शोक - संगीत सुनैबाक अनुरोध करैत छियन्हि।

गायक---[ठाढ़ भ' कए माइक क सम्मुख आबि विह्वल कंठें] आजुक अनुष्ठान क पाछाँ राजा साहब क जे अवदान अछि से त अहाँ सब जानितहि हैबैक। तैं हुनका सम्बन्ध मे किछु बाजब सूर्य कें दीपक देखायब हैत। हमरा लेल ई दुःख क बात जे हमरहि पर भार पड़ल हुनका लेल प्रार्थना - गीत गैबाक ओर से आजुक अवसर पर जखनि कि.........[कहैत - कहैत कंठावरोध भ' जाइत छन्हि। सायास अपना कें सम्हारैत गीत प्रारम्भ करैत छथि।]

ई जीवन
ई जीवन
ई जीवन एक पहेली !
क्यो जीतय
क्यो हारय
क्यो हँसय और क्यो कानय !
आशा और निराशा
जीवन केर सहेली;
ई जीवन एक पहेली !

घोषक—[गीत शेष हैबाक पश्चात् गायक-वादक दिशि इंगित करैत छथि। इंगित पाबि ओ लोकनि मंच सँ निष्क्रान्त भ' जाइत छथि।] क्षमा करब। राजा साहब क असामयिक मृत्यु हमरा सभक नाटकहु कें बड़ धक्का पहुँचौलक अछि। नचिकेताजी क जाहि ऐतिहासिक नाटक 'एक छल राजा' क अभिनयक घोषणा हम सब कैने छलहुँ तकरा उपस्थित करबा मे एखनि...... [कहैत-कहैत थम्हि कए] जे हो; हम देखि रहल छी जे भीतर की अवस्था अछि। तावत् राजा साहब क विषय मे अपने सब कें श्री धनिक लालजी किछु कहताह। [उच्च स्वरें बजबैत] धनिक लालजी !

धनिक लाल—एलहुँ। [दर्शक-मंडली क मध्य सँ उठि कए मंचक सामने क सीढ़ी द' कए चढ़ि मंचक एक दिशि ठाढ़ होइत छथि। घोषक क निष्क्रमण भ' जाइछ। आलोक केवल धनिक लालजी पर पड़ैत अछि। ओ माइक कें घिसिया कए एक कोन मे आनि, भाषण आरम्भ करैत छथि।] उपस्थित सज्जनवृन्द ! [खखसैत] हमरा आदेश भेटल अछि श्री अभिमान...... नहि-नहि राजा श्री अभिमान कुमार देव क विषय मे किछु कहबाक लेल। ......ओ बड़ नीक लोक छलाह।

हुनका सनक महान् व्यक्तिक सम्बन्ध मे हम एतबहि कहब जे...जे...जे [बुझना जाइछ जेना किछु बिसरि गेल होथि। तावत् रानी सरमा प्रवेश करैत छथि। मंचक अग्रभागक आलोक सहसा अधिक उद्भासित भ' जाइत अछि और पश्चभाग अन्धकार-पूर्णहि रहि जाइछ।-]

सरमा—[बताहि जकाँ आवेश-पूर्ण स्वर मे] बन्द करह! बन्द करह!! बस, बहुत भेल ई नाटक। हम तोहर झूठ बात नहि सुनै चाहैत छी।

मोहिनी—[प्रवेश कए अपन माय कें सम्हारबाक चेष्टा करैत अछि] माय! माय! ई तों की क' रहल छें? एतेक लोक क सामने राज-रानी भ' कए तों......

सरमा—[डाँटैत] चुप रह अभागलि, चुप! के राजा? के रानी? तों हँसी क' रहल छें?

मोहिनी—माय, ई की भ' गेलौक तोरा? हे भगवान्!

सरमा—भगवान्! के भगवान? जे निष्ठुर हाथें हमर सीँथ क सिन्दूर मेटा देलक? जे हमर समस्त व्रत-साधना सब विफल कए...... [कहैत-कहैत कानै लागैत छथि। तखनहि धनिक लाल द्रुत वेगें प्रस्थान करैत अछि।]

मोहिनी—[सान्त्वना क स्वर मे] माय, तों........ तों बताहि भ' गेल छें की?

सरमा—[कानैत और हँसैत] हँ; हम बताहि छी.....: हम बताहि......
[ओम्हर पाछाँ मे टाँगल पर्दा धीरे-धीरे उठाओल जाइछ। मंचक पश्च भाग मे अन्हार पसरल अछि।]

मोहिनी—नहि माय, तों रानी छियें, रानी सरमा, महाराज अभिमान कुमार देवक रानी और हमर माय!

सरमा—[कौतुक भरल दृष्टि सँ एक बेर ताकि कए उच्च स्वरें अट्टहास करैत] राजा........रानी........हम रानी आ' तों राजकन्या........
[हँसैत-कानैत आँखि मे नोर आबि जाइत छन्हि।]

मोहिनी—माय, की तों रानी नहि छियें ? की बाबूजी राजा नहि......?

सरमा—क्यो किछु नहि अछि। आब क्यो किछु नहि। [विचित्र दृष्टिएँ ताकैत] सब चलि गेल! धन छल, राज छल, प्रजा छल, राजा छल, [कहैत-कहैत दृष्टि प्रखर भ' जाइत छन्हि] हँ; एखनि क्यो राजा नहि। छल एक टा राजा! [मंचक दहिन कोन दिसि आबैत छथि। अग्र भागक आलोक मद्धिम भए मिझा जाइछ। मात्र सरमा तथा मोहिनी पर आलोक-पात भ' रहल अछि।] हँ; एक छल राजा, एक छल रानी। राजा मरि गेल शेष कहानी। बुझलें मोहिनी? एक छल राजा एक छल रानी.........!

मोहिनी—[अश्रु बेग कें रोकैत] माय!

सरमा—[आरो उच्च स्वरें] हँ; एक छल राजा, एक छल रानी; [कहैत-कहैत प्रस्थान करैत छथि। पाछाँ लागल मोहिनियो चलि जाइत अछि। आलोक-पात बन्द भ' जाइछ। चारू दिसि सँ प्रतिध्वनित भ' रहल अछि नारी कंठ क स्वर "एक छल राजा, एक छल रानी।" आवाज धीरे-धीरे मद्धिम भ' जाइत अछि।]

द्वितीय दृश्य

राजा अभिमान कुमार देव—[अन्हारे मे] के ? [तावत् सरमा क स्वर भासल आबि रहल छल । धीरे-धीरे प्रकाश होइछ आ' समस्त शब्द बन्द भ' जाइछ । राजा उच्चासन पर बैसल छथि । हुनक मुख पर अल्प छाया पड़ैछ । मंच पर धीरे-धीरे अल्प आलोक पसरैत अछि । राजा उठैत] के ? के थिकहुँ ?

बिरंचि—[नेपथ्य सँ] हम छी सरकार, बिरंचि ।

राजा—ओ ! आउ ।

बिरंचि—[प्रवेश करैत छथि । पीठ झुकल । हाथ मे लाठी, नाक पर चश्मा, बाम हाथे कागज-पत्र नेने] आइ सरकार अन्हार क' कए बैसल छी ई सँझुके पहर ?

राजा—हवेली क काज मे चतुर कें पठौने छथिन्ह ।

बिरंचि—ओकरा त हम बहुत काल पहिने जाइत देखलहुँ । तखन एखनहुँ तक आयल कियैक नहि ? [किछु काल सोचैत] सरकार !

राजा—[किछु सोचैत छलाह । ध्यान भग भेला पर] उँ !

बिरंचि—आइ हम गेल छलहुँ ।

राजा—कतय ?

बिरंचि—पन्नाबाइ क ओतय । मुदा.........

राजा—मुदा की ? [उठि कए बैसैत] की ओ मुजरा नहि गछलक ?

बिरंचि—नहि, गछत कियैक नहि ? अपने ओकरा महफिल मे बजा रहल छी, आ' ओ नहि आबै चाहत ?

राजा—तखन ?

बिरंचि—तखन......[किछु काल चुप रहि जाइत छथि] ।

राजा—[गरजैत] विरंचि !

विरंचि—माफ करब सरकार, हम कोना कहू जे राज-कोष मे किछु नहि छैक !

राजा—[बड़-बड़ करैत] नहि ! ई नहि भ' सकैछ !

विरंचि—ई भ' सकैछ, आ भेल अछि सरकार ! एखन की पहिलुका ओ आमद रहलैक ? सरकार जे किछु दैत छल सेहो बन्द भ' गेल। प्रजा नामक कोनो वस्तु रहलैक नहि।

राजा—ई सब हम जनैत छी दीवान जी ! आ' अहाँ बहुत बेर सुना चुकल छी, किन्तु ई सब हमरा सह्य नहि होइछ।

विरंचि—हमरहि की कहबा मे कोनो आनन्द भेटैत अछि ? मुदा, एखनि एहन आमद मे एत्तेक पैघ खर्च कोना पार लागत ?

राजा—[शून्य दिसि देखैत] कोना पार लागत ? सात साल सँ प्रत्येक वर्ष इयैह सुनैत आयल छी जे कोशी क सत्यानाशी बाढ़ि सब किछु भसिया कए ल' गेल। प्रति वर्ष जमीन-जगह बेचि कए सब खर्च ओना चलैत आयल अछि, अहू बेर तहिना चलत।

विरंचि—सरकार !

राजा—की करू ? एक टा बेटो नहि अछि जे निर्लज्ज जकाँ आँखि-कान मुनने तकरहि कमाइ खाइत रही।

विरंचि—सरकार !

राजा—[पाछाँ मुड़ि कए] कहलहुँ त; खर्च नहि चलैत अछि त जमीन कियैक नहि बेचैत छी ?

विरंचि—कौन जमीन सरकार ?

राजा—कियैक, ओ पोखरि पर क......

विरंचि—सरकार ! ओ सब किछु नहि बचल।

राजा—[क्रुद्ध भए टहलैत] नहि बचल तखन हम की करू ? एक हमही टा बाकी छी; हमरहिं बेचि लिय'। [राजा घुर-महुर कर' लगैत छथि।

विरंचि किछु कहबाक चेष्टा करैत अछि, किन्तु कहि नहि होइत छैक] आब ठाढ़ की छी ? जाउ, आ' सन्दूक मे जे किछु अछि से सब कोनो महाजन क पास ल' जा कए बूझू ग' जे कत्तेक हैत। [विरंचि कें तैयो ठाढ़ देखि] की ? ओहो सब समाप्त क' देलहुँ की ? [विरंचि माथ झुका लैत छथि] वाह ! तखन आर की चाही ? किछु जखन अछिये नहिं !

विरंचि—किछु कियैक नहि रहत मालिक ! किन्तु अहाँ जेना चलाबै कहै छी ताहि से त एक्कहि-दुइ मास मे सब टा स्वाहा भ' जायत ।

राजा—दीवान जी !

विरंचि—हँ सरकार ! ई सब बात कहबाक अधिकार हमरा नहि अछि से हम जनैत छी। तैयो हम कहब। एना अहाँ ध्वंस भ' जायब। विलासपुर क ई राजमहल उजड़ि जायत सरकार !

राजा—[अगुआ कए] ठीके हैत ! ई सबटा पूर्वपुरुष क पाप क फल थीक। हमर पुरखा सब जत्तेक सती नारी क अभिशाप जुटौलन्हि, जत्तेक प्रजा क मुख क ग्रास छिनलन्हि, जत्तेक अनाचार कैलन्हि—ई सब तकरहि फल थीक। जनैत छी, राति मे जखन हम सूत' चाहै छी त हमर कान मे माटि क तर सँ क्रन्दन और चीत्कार भासल आबैत अछि। बिछौना क चारु कात हम रक्त-स्रोत देखै छी। और ओहि स्रोत क संग पायल क झुनझुन आ' सारंगी क क्रन्दन। हमर हाथ दिसि देखू, शोणित लागल अछि शोणित ! हमर नीन्द टूटि जाइत अछि और दुनू हाथ कें हम मलैत रहै छी, रगड़ैत रहै छी, मुदा रक्त क चेन्ह नहि मेटाइत अछि ।

विरंचि सरकार !

राजा—हँ ! हम घर क देवाल पर एक टा कारी छाया देखैत छी। ओ छाया हमरा ग्रास करबा क लेल दौड़ल आबैछ। ओकर मुख मे लागल अछि लाल - लाल रक्त। हमर देह पसीना - पसीना भ' जाइछ आ'

ओहि पसीना क प्रत्येक बुन्द मे ओहि छाया कें देखै छी। कारी छाया और लाल रक्त। तखन हम चिकरि उठै छी।

बिरंचि—[जोर सँ] सरकार!

राजा—[होश मे आबि] के? अ! अहाँ? अहाँ की ने कहैत छलहुँ?

बिरंचि—हम की कहब सरकार? छोट मुहँ, पैघ बात भ' जायत। [एक क्षण मौन क बाद] हम कहैत छलहुँ जे कहुना कए जौं फिजूल खर्च कें रोकल जाय त......।

राजा—[भौं सिकोड़ि कए] फिजूल खर्च? अहाँ कह' की चाहैत छी?

बिरंचि—एखनहुँ राजमहल मे पच्चीस-पचास बाहर क लोक पड़ल खाइत अछि।

राजा—ओ सब हमर आश्रित थिकाह।

बिरंचि—मुदा जखन हमही सब आश्रय खोजि रहल छी, तखन हुनका सभक दायित्व........।

राजा—अहाँ करै की चाहैत छी?

बिरंचि—हुनका सब कें हाथ-पाँव जोड़ि कए बिदा करै चाहैत छी। ताहि मे किछु पाइयो देब' पड़ै त सेहो नीक।

राजा—[निस्पृह भावें] बेस, जे इच्छा होमय से करू।

बिरंचि—आरो एक टा बात छल.........

राजा—[आन दिसि मुहँ फेरैत] कहू।

बिरंचि—एहि बेरि जौं दुर्गा-पूजा मे........

राजा—[किछु क्रुद्ध भ' कए] अहाँ की चाहैत छी जे सेहो बन्द क' दी?

बिरंचि—नहि सरकार! हम से कतय कहैत छी? हम त मात्र खर्च कम करबाक लेल कहैत छलहुँ......

राजा—[दर्शक दिसि देखैत] की हम एहन हतभाग्य छी जे मा केर पूजाओ करबा क क्षमता हमरा मे नहि रहल?

बिरंचि—अहाँ सब सै बरस सँ खूब धूम-धाम क संग पूजा करैत ऐलहुँ।

एम्हर कैक वर्ष सँ ताहि मे किछु कमी भ' गेल अछि। पहिने एहि अवसर पर नाच, गाना, नाटक सब किछु होइत छल। तैयो गत चारि वर्ष त आर सब किछु भेबे कैल, मात्र नाटक टा नहि भेल। गत वर्षो त पन्नाबाइ अपन मुजरा पेश कैने छल। नाटक नहि भेल छल त की भेल ?

राजा—एकर बाद अहाँ कहब, एहि बेरि नृत्यो - गीत नहि हैत त कोन हरज ?

विरंचि—सैह त कहैत छलहुँ जे एहि बेरि जौं पन्नाबाइ कें.........

राजा—नहि, कथमपि नहि।

विरंचि—[अनुनय-पूर्ण कण्ठें] सरकार !

राजा—नहि, दीवानजी, नहि। हम जा धरि जीवित छी ता धरि ई सब बन्द नहि होमय देब। भने ताहि लेल हमर सवस्व चलि जाइक।

विरंचि—आब बाकी की रहल सरकार ? सब त चलिये गेल। एतबा धरि जे राजमहलो क आधा गिरवी पर अछि।

[तावत सरमा प्रवेश क' कए चट क अ'ढ़ मे ठाढ़ भ' जाइत छथि]।

राजा—हे भगवान ! हमर मृत्यु कियैक नहि होइछ तकर पहिने ? आब सैह टा बाकी अछि। [एतबा मे चट क अ'ढ सँ कनेक निकलैत, दर्शक क दृष्टि क सम्मुख अबैत रानी क चूड़ी क आवाज सुनाइ पड़ैछ]।

सरमा—की सब अशुभ बात मुँह सँ निकालैत छी ?

राजा—[सरमा दिसि घूमि कए चट क पास जा कए] खराब त अवश्य लगैत हैत सुन' मे, मुदा आब दोसर कोनो पथ नहि।

सरमा—बहुत पथ अछि। एतय बगलहि मे बिष्णुपुर क अर्जुन बाबू कें देखू। एतय सब किछु बेचि कए ओ शहर चलि गेलाह; ओतय छोट-छीन मकान बना कए......

राजा—हुँ ! हुँ ! मकान बना कए ताहि मे अपराधी जकाँ नुका रहैत छथि जाहि सँ शहरहु मे विष्णुपुर-बिलासपुर क क्यो भेंटि ने जाइन ! नहि

सरमा, ई हमरा स नहि हैत। हम चोर जकाँ रातु क अन्धकार मे पड़ा नहि सकब। ताहि सँ त मृत्युए नीक।

सरमा—छिः! एना नहि बाजू।

विरंचि—की कहब रानी जी ? हम त कत्तेक बेरि सरकार कें समफैलहुँ-बुफैलहुँ जे एखनहु जौं सम्हारि कए चली, त चलि सकैत अछि।

राजा—की चलि सकैत अछि दीवान जी ? [म्लान हँसैत] तखन हँ, हमर मृत्यु क उपरान्त श्राद्ध क खर्च नीक जकाँ कैल जा सकत।

सरमा—अहाँ बन्द करब कि नहि एहन सब बात। की भेल अछि अहाँ कें ?

विरंचि—अहीं समफाबिऔन रानीजी! हम तावत चलै छी। कालिह भोरे चलि आयब। पूजा मे सेहो आब बेसी देरी नहि रहल।

राजा—अहाँ कहैत छी, एहन सब बात जुनि करू, मुदा विलासपुर-विष्णुपुर क सब लोक भीषण कौतुक सँ हमरा सभक जीवाक संग्राम दिखि देखि रहल छथि। ओ सब देखि रहल छथि जेना कोनो वियोगान्त नाटक हो। ओ सब मने-मन सोचि रहल छथि जे कखन महाराजाधिराज मरताह आ' हम सब हुनक श्राद्ध क लेल कें कत्तो चन्दा देब।

सरमा—आह, फेर वैह बात ? तखन अहाँ इयैह सब सोचैत रहू, हम जाइत छी। ओम्हर बेटी क छुट्टी भ' गेल अछि आ' ओ कालिहये आबि रहल अछि, से मन अछि ?

राजा—[स्वगतप्राय] मोहिनी, हमर बेटी, राजकन्या! लाजे शहर मे बाप क नामो नहि कहैत हैत।

सरमा—कालिह ओकर आरो एकटा चिट्ठी भेटल अछि। [आनन्द क मुद्रा मे] जनैत छी, की लिखलक अछि ?

राजा—नब की लिखत ?

राजा—[किछु काल चुप रहि कए] ओ अपन वर पसिन्न क' नेने अछि।

राजा—[उत्तेजित भए] की ? की कहलहुँ ?

सरमा—एहि मे उत्तेजित हैवाक कोन बात अछि ?

राजा—[पदचारणा करैत मंच क सम्मुख भाग मे आबै छथि] ओह, अहाँ कि पाथर भ' गेल छी सरमा ? अहाँ क प्रत्येक शब्द हमर देह कें जेना झरका देलक अछि। छिः, छिः, छिः, करोक लज्जा क.........

सरमा—एहि मे लज्जा क कोन बात अछि ? आइ-काल्हि छोट-पैघ सभ क घर मे बेटी क बियाह क रीति बदलि गेल अछि। आब हमरा सभ क जमाना नहि रहल। आब धी-बेटी अपन वर अपनहि पसिन्न करैत अछि।

राजा—हमरा ताहि लेल लाज नहि अछि जे हमर बेटी हमर पसिन्न कैल वर सँ वियाह नहि करत।

सरमा—तखन लाज कथी क ? समाज क ?

राजा—नहि! लाज अपन अस्तित्व पर। लाज नहि, ओकरा घृणा कहब उचित हैत। हम बेटी क बियाह करबाक योग्य नहि छी, से मोहिनी आंगुर उठा कए हमरा बुझा देलक। बुझा देलक जे हमर एहि विशाल महल क भीतर एक टा विराट शून्यता अछि; सब फोंक अछि—हम, हमर राज्य, हमर क्षमता, हमर अर्थ, हमर स्नेह...... [कहैत-कहैत आँखि मे नोर आबि जाइत छन्हि।]

सरमा—[कनैत-कनैत अपना कें सम्हारि कए] ई की ? अहाँ कनैत छी ?

राजा—नहि, [स्वर बदलि जाइछ] राजा अभिमान देब कनैत नहि अछि। अभिमान क कयो कानब सिखौलकै नहि। कहू, ओ आर की लिखलक ?

सरमा—ओ लिखलक अछि जे भावी वर कें ल' कए ओ काल्हि आबि रहल अछि।

राजा—काल्हि ?

[मंच अन्हार भ' जाइछ।]

तृतीय दृश्य

[अन्हार मे एक टा टमटम चलबाक शब्द आ' घोड़ा क टाप सुनाइ पड़ैछ।...... मंच आलोकित होइत अछि।]

मोहिनी—माय! माय! [प्रवेश करैत अछि। आधुनिक वेशभूषा, मुदा कतहु उग्रता नहि अछि। मोहिनी क पाछू शुभंकर क प्रवेश। आधुनिक शहर क वेश-भूषा।] माय! [ककरहु नहि देखि] कतय गेल अछि सब क्यो? दीवान जी त कहलन्हि जे सब घरे पर छथि तखन......।

शुभंकर—[गला क टाइ कें कनेक ठीक करैत] अहाँ क ई मकान त राज-महले सन लगैछ।

मोहिनी—राजमहल सन लागत की, राजमहले त थीक।

शुभंकर—इज इट? ई राजमहल थीक? तखन—

मोहिनी—तखन की?

शुभंकर—अहाँ, अहाँ राजकन्या? [एहि बात पर मोहिनी हँसि दैत अछि]। नो नो, डोण्ट लाफ। टेक इट सीरियसली। यू सेड यू आर अ प्रिंसेस! आइ मीन राजकन्या!

मोहिनी—हम किछु नहि कहलहुँ। एना नहि करू। एखनहि बाबूजी आबि जैताह!

शुभंकर—बाबूजी? यू मीन राजा? महाराजा?

[राजा साहब प्रवेश क' कए मोहिनी कें देखैत छथि। शुभंकर पोशाक ठीक-ठाक कर' मे व्यस्त भ' जाइत अछि।]

राजा—बेटी! तों आबि गेलह? [उच्च स्वरें] अरे चतुरलाल, कतय छिहीं रौ, सामान सब टा ल' जो। [शुभंकर पर नजरि पड़ैत] हिनका

चिन्हलियन्हि नहि ?

शुभंकर—[अगुआ कए] लेट मी इंट्रोड्यूस मिसेल्फ सर! आइ एम शुभंकर.........शुभंकर पाठक। हम अध्यापन करैत छी। [कनेक रुकैत - रुकैत कहैत छथि] अ.........माने अहाँ क विषय मे मोहिनी सँ बहुत सुनलहुँ। [की करताह फुरैत नहि छन्हि। तैं हाथ बढ़ा कए] वेरी ग्लैड टु मीट यू सर.........आइ मीन !

राजा—[राजा हाथ नहि बढ़बै छथि। शुभंकर क बाजब -भूकब नीक जकाँ देखि रहल छथि] शुभंकर बाबू के थिकाह मोहिनी ?

मोहिनी— [विह्वल शुभंकर कें देखि घबड़ा कए] माय जनैत छथि। चिट्ठी मे सब किछु लिखने छलहुँ। माय कतय छथिन्ह ?

राजा—[मोहिनी क अन्तिम वाक्य क ख्याल बिना कैने अपन आसन दिसि जाइत - जाइत] ओ बुझलहुँ।

मोहिनी—[शुभंकर क पास आबि मन्द स्वरें] पैर छूबि कए प्रणाम करू ने ! [कहैत-कहैत ओं महाराज क पैर छूबि, प्रणाम करैत अछि]।

राजा—हाँ, हाँ ठीक अछि ! [शुभंकर क दिसि देखि कए] हिनका भीतर ल' जाहुन्ह अपन माय लग।

मोहिनी—अच्छा बाबूजी ! [शुभंकर दिसि देखैत] चलू !

[चतुरलाल प्रवेश करैछ।]

राजा—जाउ! सामान चतुरलाल कें द' दियौक। ओ अहाँ कें रहबाक कमरा देखा देत।

शुभंकर—नहि, नहि; ठीक अछि। भने त बैसल छी। [घबड़ा कए हँसि दैत अछि।]

मोहिनी—त ठीक अछि। हम भीतर जाइत छी। अहाँ बाद मे आउ। चलू खबास ! सामान सबटा भीतर ल' चलू।

[मोहिनी क प्रस्थान। चतुरलाल माल नेने जाइत अछि। किछु क्षण निस्तब्धता रहैत अछि। शुभंकर एकटा अखबार सँ मुहँ

झाँपि कए बीच-बीच मे राजा दिसि देखैत पढ़बाक चेष्टा करैत अछि। राजा गड़गड़ा क नल मुँह मे लगौने तीव्र दृष्टियें शुभंकर कें आपादमस्तक देखैत छथि।]

शुभंकर—[तेसर बेर राजा सँ आँखि मिल गेला पर] माने, पुरान अछि।

राजा—[भौं सिकोड़ैत] की ? महल ? [गड़गड़ा क नल हटा लैत छथि]।

शुभंकर—नहि, आइ मीन ई पेपर; पेपर पुरान अछि।

राजा— [किछु खिन्न भए] हूँ ! ई शहर नहि थीक। [पुनः गड़गड़ा क नल मुख मे लगबैत छथि।]

[शुभंकर अखबार कें किछु उनटा - पुनटा कए राखि दैत छथि। पाकिट मे किछु खोजबाक अभिनय करैत छथि; नहि पबैत छथि।]

राजा—की खोजैत छी ?

शुभंकर—आँय ! नहि, किछु नहि। सूटकेस क चाभी।

राजा—[किछु चिन्तित जकाँ] अहाँ की करैत छी कहने छलहुँ ?

शुभंकर—[नहि सुनैत] पासिब्ली मोहिनी क रिंग मे हैत।

राजा—हम से नहि पूछैत छी। अहाँ क प्रोफेशन की थीक ?

शुभंकर—ओ, प्रोफेशन ? प्रोफेसर, माने प्रोफेसर !

राजा—की पढ़बैत छी ?

शुभंकर—हम लिंग्विस्टिक साइन्स पढ़बैत छी।

राजा—कोन साइन्स ?

शुभंकर—जी, लिंग्विस्टिक साइन्स। माने साइन्स आफ लैंगुएजेज। [राजा कें समझाबैं लगैत अछि] जकरा मैथिली मे भाषा - विज्ञान कहैत छैक।

राजा—[पुनः शुभंकर कें निरीक्षण करैत] ओ !

शुभंकर—हमर काज, आइ मीन थीसिस अछि चॉम्स्कियन थियोरी पर। हमरा क्वांटिटेटिव लिंग्विस्टिक्स बहुत पसिन्न.........

राजा—[बाधा दैत] ओ, अहाँ पी एच० डी० कैने छी की ?

शुभंकर—यस सर, एण्ड आइ हैव सबमिटेड ऐन ऐप्लिकेशन फॉर डी. लिट.। यद्यपि हम एतय डी० लिट० कर' नहि चाहैत छी। हम चाहैत छी एकटा बिदेश क डिग्री।

राजा—ओ! [मौन] अहाँ बिदेश जा रहल छी ?

शुभंकर—अफ कोर्स आफटर मैरेज। बियाह क बाद आ' सेहो मोहिनी क संग।

राजा—कत्तेक दरमाहा भेंटैत अछि कालेज सँ ?

शुभंकर—[घबड़ा कए, निरुत्साहित भए] सघा छ' सै।

राजा—ओ! [किछु काल चुप रहि कए] जाउ! भीतर जाउ।

[शुभंकर चुपचाप प्रस्थान-पथ क दिसि बढ़ैत अछि। बत्ती बन्द भ' जाइत अछि।]

चतुर्थ दृश्य

[दृश्य-सज्जा बदलि जाइत अछि। पाछाँ क चट नहि रहैत अछि। शय्या मे राजकीयता क चेन्ह नहि रहैत अछि एवं शय्या मंच क मध्यभाग मे राखल रहैत अछि। उच्चासन क स्थान पर मंच क एक कोना पर वेदी रहैत अछि, जाहि पर क्यो बैसि सकैत अछि। शय्या पर उपविष्ट सरमा आ' पाछाँ मे ठाढ़ मोहिनी क वार्त्तालाप सँ दृश्य आरम्भ होइछ।]

सरमा—शुभंकर कतय गेलाह बेटी ?

मोहिनी—ओ खबास क संग गाम देखए गेल छथि।

सरमा—बड़ नीक अछि। [मोहिनी लजा जाइत अछि] इयेह बात हम तोहर बाबूजी सँ कहलहुँ त ओ.........।

मोहिनी—ओ की कहलन्हि ?

सरमा—ओ कहलन्हि—अहाँ त जकरा देखैत छी तकरहि अपना जकाँ बुझैत छी।

मोहिनी—हमरा हुनकहि डर छल जे ओ हमर एहि काज सँ प्रसन्न नहि हेताह।

सरमा—धुर बताहि ! ओ तेहन किछु नहि कहलन्हि। तों त जनितहि छें ओ बेसी किछु बजैत नहि छथि। तों एत्तेक सोचैत कियैक छें ?

मोहिनी—नेनहि सँ बाबूजी कें तेहन ने गंभीर देखैत अयलहुँ जे डर होइत अछि माय।

सरमा—हुनका मनैबाक भार हमरा ऊपर छोड़ें। शुभंकर नीक लड़का अछि, नीक घर क अछि, नीके कमाइत अछि। एहि में आपत्तिक प्रश्ने नहि। तों डर-भर छोड़ें आ देख—भनसिया औंघाइत हैतैक। बेचारा शुभंकर कें भूखो लागि गेल हैतैक। [मोहिनी प्रस्थानोद्यत

होइछ] ई राति कें कियैक जे बहरैला !

मोहिनी— [जाइत-जाइत पाछाँ घूरि कए] हमहूँ मना कैने छलियन्हि जे साँझ कें नहि बहराउ। भोरके पहर टहल' लेल चलि जायब त ओ बात हुनका नीक नहि लागलन्हि। कह' लागलन्हि—शहर मे त तारा सब नजरियो नहि आबैत छल। एखन त आस मेटाब' दीय'। [कहैत-कहैत प्रस्थान करैत अछि। सरमा एक टा पत्रिका पढ़' लगैत छथि कि मोहिनी पुनः प्रवेश क' कए केवाड़ी क पास सँ कहैत अछि] माय! देख, के आयल छथि !

सरमा—के आयल अछि ? [कहैत द्वार दिसि देखैत छथि कि धनिक लाल क प्रवेश होइत अछि।]

धनिक—हम छी रानी मा।

सरमा—अरे, धनिक तों ? कहिया एलह गाम पर ? शहर मे सब ठीक-ठाक छैक ने ?

धनिक—हँ रानी मा, अहाँ क आशीर्वाद सँ सब किछु ठीके चलि रहल अछि।

सरमा—तों कत्तेक पैघ भ' गेलह। तोरा त पहिने हम चिन्हबे नहि कैलहुँ।

धनिक—सब सैह कहैत अछि। आइये त अयलहुँ। एम्हर किछु दिन सँ गामे पर रहबाक मन करैत अछि।

सरमा—चलह। क्यो त कहैत अछि जे गामे नीक लगैत अछि। नहि त, शहर जा कए क्यो गाम दिसि घूरियो कए नहि तकैत अछि। इयैह मोहिनीये कें देखह ने। हम सब नहि रहितहुँ त ओ गाम अबितै ?

धनिक—अरे हँ, ओहो त शहरे मे रहैत छथि। देखू त, हम एक दम बिसरिये गेल छलहुँ। [किछु कालक पश्चात्] एखन एतय कियैक छथि ? कालेज खुजल नहि छैक की ? कि बियाह क जोग छैक ?

सरमा—कालेज क छुट्टी त पहिनहि भ' गेलैक। आ' बियाह द' सेहो ओ सोचि रहल छथि।

धनिक—अच्छा, अच्छा ! [बैसैत] चलू, गाम पर ऐलहुँ त बहुत दिनक बाद एकटा भोजो भेंटत।

सरमा—[हँसैत] से देखह ! गाम पर बियाह होइत अछि वा नहि।

धनिक—कियैक, कियैक ? गाम पर कियैक नहि हैतैक ? हम सब की कथी लेल ? तेहन ने खटबैक बहिन दाइ क बियाह मे कि......!

सरमा— सैं नहि। लड़का शहर क अछि।

धनिक—ताहि सँ की ?

सरमा—खाली सैह नहि। मोहिनी क बाबूजी चाहैत छथि जे बियाह शहर मे हो। ओतय चीज वस्तु क बहुत सुबिधा हैत। आयोजन आदि क नीक प्रबन्ध भ' सकत।

धनिक—नहि रानी मा ! एतय सँ नीक व्यवस्था आब कत' हैत ? हमरा त मन नहि लागैत छल ओतय। बारह बरस कोना गाम छोड़ि कए बितौलहुँ से आश्चर्य।

सरमा—तों सत्ते ओतय नहि रहबह की ?

धनिक—एह, ओतय लोग रहैत अछि ? यद्यपि एकटा छोट - छीन मकानो बनौने छी। एक भाइ ओत्तहि अछि अपन परिवार नेने। हम अपन धीया-पूता ल' कए एतय आबि गेलहुँ। एखन ओतुक्का कारबार वैह चलाओत। एतय हम जमीन-जाल देखब।

सरमा—मुदा तोहर और एक टा भाइ जे एतय रहैत अछि, तकर......।

धनिक—तकरा शहर पठा रहल छी पढ़बा-लिखबा लेल। एतय ने ओकर पढ़ाइ होइत अछि और ने ओकरा सँ जमीने-जाल ठीक तरहेँ देखल होइत छैक। आ' तकर अलावे एतेक जमीन पड़ल अछि। सब बेकारे ने ?

[मोहिनी क प्रवेश।]

सरमा—से त ठीक बात।

धनिक—ऐबा सँ पहिने एकटा ट्रैक्टर बुक कैने छलहुँ। सेहो आबिते हैत

रेलगाड़ी सँ। एतय आरो जमीन सब लेबाक बिचार अछि।

मोहिनी—[धनिक क बात ध्यान सँ सुनि कए] तकर माने धनिक भाइ बहुत बड़का धनिक भ' गेलाह।

[एहि बात पर सब क्यो हँसि दैत छथि।]

धनिक—नहि, से बात नहि। ओतय बारह बरिस पहिने जे गेल छलहुँ, तखन मने मन इच्छा छल, उन्नत तरहेँ कोना खेती - बारी कैल जाइत अछि से सीखी। पहिने त पाइ कमबै मे लागलहुँ हम दुनू भाइ। जब बिजनेस चलै लागल.........

मोहिनी—कथी क बिजनेस अछि अहाँ क ?

धनिक—कपड़ा केर एकटा दोकान देने छी आ' बगले मे एकटा स्टेशनरी दोकान सेहो अछि।

सरमा—हँ, की ने कहैत छलह ?

धनिक—हँ, जखन बिजनेस ठीक-ठाक चलै लागल, तखन हम समय बचा कए ओतय एक टा एग्रिकलचरल इन्स्टिट्यूट मे.........

मोहिनी—हँ हँ, हम देखने छी। गोल घर क पास ने ?

धनिक—हँ, ताहि मे ई सब सिखलहुँ। देखैत छी तकरा काम मे लगा सकैत छी कि नहि।

सरमा—भगवान तोरा और देथु।

धनिक—हमर भगवान त अहीं सब छी रानी मा। नेना मे अहीं क आङन मे खेलायल छी। मा के त देखलहुँ नहि, मा केर स्वाद अहीं मे पौलहुँ। तैं गाम अबितहि सब सँ पहिने अहीं क एतय ऐलहुँ।

सरमा—नीक कैलह।

मोहिनी—अहाँ आइये आयल छी की ?

धनिक—आइये भोर।

मोहिनी—अहाँ कें स्टेशन पर नहि देखलहुँ। हमहूँ सब त भोरके गाड़ी सँ आयल छी।

धनिक—हम ट्रेन सँ नहि ऐलहुँ; अपन जीप सँ ऐलहुँ।

मोहिनी—नहि, तखन त सत्ते अहाँ महा धनिक बनि गेल छी।

धनिक—[हँसैत] से त बुझलहुँ, मुदा ई कहू 'हमहूँ सब' माने की ? के के ऐलहुँ ?

[मोहिनी किछु नहि कहि, सरमा दिसि तकैत अछि।]

सरमा—शुभंकरो आयल अछि।

धनिक—शुभंकर के ? नहि चिन्हलहुँ त !

सरमा—मोहिनी क भावी वर।

धनिक—[आनन्द क भंगिमा मे] आँय ! सत्ते की ? तखन त हुनका स परिचय-पात करै पड़त। [मोहिनी कें] कतय छथि ? बजा पठाउ हुनका।

मोहिनी—बाहर गेल छथि टहलै लेल।

धनिक—ओ हो ! तखन त आइ नहि भेल। कोनो बात नहि, जैह आइ सैह कालिह। [किछु मन पड़ि जाइछ] अरे हँ, देखू त। हम एकदम बिसरिये गेल छलहुँ।

मोहिनी—की ?

धनिक—हमहूँ त तेहने ने छी जे......। जाहि काज लेल ऐलहुँ, सैह बिसरि जाइत छलहुँ।

सरमा—कोन काज ?

धनिक—अरे, हमर बेटा मुन्नू अछि ने ? ओह, अहाँ त नहि चिन्हैत छी। त सैह, कालिह ओकरहि जन्म दिन अछि। शहर मे त खूब धूम-धाम सँ जन्म दिन मनबैत छलहुँ। एहि बेरि हड़बड़ी मे बेसी किछु व्यवस्था नहि क' सकलहुँ। एक गोटे कें पहिने पठा देलहुँ एम्हर सब व्यवस्था ठीक राखबाक लेल। आ' हम ओम्हर शहर सँ आबैत काल पन्नाबाइ कें मुजरा क लेल कहने ऐलहुँ। ओहो त भोरके ट्रेन सँ आयल अछि।

मोहिन—तैं ने कहू। हम त भोर स्टेशन पर पन्नाबाइ कें देखि कए सोचैत

छलहुँ जे की बात थीक ?

सरमा—तखन त तों विशेष व्यवस्था कैने छह !

धनिक—नहि, हड़बड़ी मे जे भ' सकल। गाम क सब कन न्योत पठौने छी। अहूँ सब कालिह अवश्ये जायब। हम गाड़ी पठा देब।

सरमा—[एहि बात पर आनन्दित मुख कनेक गम्भीर भ' जाइत अछि।] मुदा मोहिनी क बाबूजी त.........

धनिक—[बाधा द' कए] हुनको अवश्य कहबन्हि। नेना मे हुनका दुर्गा पूजा क समय मे देखैत छलहुँ बड़का - बड़का उस्ताद सब सँ ठुमरी, गजल आ आलाप सुनैत। हुनका त अवश्य नीक लागतन्हि पन्नाबाइ क मुजरा।

सरमा—से ओ पन्नाबाइ क गीत सुनने छथि। गत वर्ष एतय ओकरे आनल गेल छल।

धनिक—ओह! पन्नाबाइ एतय आबि चुकल अछि। तैं ओकरा मुँहें राजा साहब क नाम सुनने छलहुँ। हम बुझलहुँ, ओ आन किनकहु द' कहि रहल अछि।

सरमा—तैं.........ओ त भरिसक नहि.........

धनिक—त ठीक अछि। अहाँ दुनू अवश्य आउ। भरि गाम क जर-जनानी सँ ल' कए बच्चा - बूढ़—सब कें बजौने छी। अहाँ सब नहि जायब त.........

सरमा—ठीक छैक, हम चेष्टा करब। मोहिनी क बाबूजी जौं जाय देथिन त ....! माने.........आइ - कालिह त हम विशेष बहराइत नहि छी। तखन हँ, मोहिनी आ' शुभंकर कें हम पठा देब।

धनिक—अच्छा, त एखनि हम चलैत छी। अच्छा [मोहिनी कें] त कालिह त शुभंकर बाबू सँ भेंट हैबे करत।

[धनिकलाल क प्रस्थान।]

मोहिनी—[धनिक क प्रस्थान - पथ क दिसि देखैत] माय ! मात्र हमरहि

सभ क नाम कियै कहलें ? [बाहर सँ महाराज क खखास सुनबा मे अबैत अछि। मोहिनी कनेक विचलित हैत] माय! बाबूजी आबि रहल छथि।

[सरमा अपना कें प्रस्तुत क' लैत छथि। राजा साहब क प्रवेश क संगे दुनू ठाढ़ भ' जाइत छथि।]

राजा—सरमा !

सरमा—जी !

राजा—पछुआड़ मे ककर ने एकटा जीप ठाढ़ देखलहुँ—बाग मे टहलैत-टहलैत। क्यो एतय आयल छल की ?

सरमा—हँ। धनिक आयल छल !

राजा—धनिक ? धनिक के भेल एहि गाम क ?

सरमा—अहाँ ओकरा एखन देखब त नहि चीन्हब। मुदा, अहाँ कें मन त हैत; एकटा बच्चा नेना मे एहि हवेली मे खेलैत छल—मोहिनी क संग.........पन्द्रह बरिस पहिने.........। वैह आयल छल।

राजा—[चौंकि कए बात क बीचहि मे बाधा दैत] के ? लूटन क बेटा ?

मोहिनी—हँ; तकरे बेटा धनिक लाल।

राजा—[कठोर स्वरें] ओ एतय कियैक आयल छल ?

सरमा—[मोहिनी किछु कहै जाइत अछि; सरमा मोहिनी कें बाधा द' कए] हम कहैत छी ओ कियैक आयल छल। [किछु काल मौन रहि कए] ओकर बेटा क कालिह जन्म दिन थीक। तें गाम क सब लोग कें न्योत देने अछि। और तें, ओकर दुआरि पर कालिह पन्नाबाइ क महफिल.........।

राजा—और ओहि नीच कुकुर क आङन मे जेवाक लेल अहाँ सब कें ओ हकार देब' आयल छल ?

सरमा—छि; ! जत्तेक दिन जा रहल अछि अहाँ और बदलल जा रहल छी। [मोहिनी क प्रति] तों भीतर जो। [मोहिनी क प्रस्थान क बाद]

धनिक हमरा सब कें न्योत देब' आयल छल; एहि मे कोन अन्याय अछि ?

राजा—हम न्याय - अन्याय नहि बुझैत छी। हम ओहि नीच वंश क कोनो लोक क छाया धरि नहि देख' चाहैत छी।

सरमा—किन्तु कियैक ? ओ सब जाति सँ छोट अछि, तैं ? की अहाँ ओहि टोला क आन ककरहु घर बियाह - शादी क अवसर पर नहि गेल छी? से जौं गेल होइक, तखन ई... : ...

राजा—[कनेक उच्च स्वरें] सरमा! सब बात पर दखल नहि दियह। अहाँ ओकरा विषय मे किछु नहि जनैत छी। [स्वर बदलि कए, स्वाभाविक कण्ठें, दृढ़ रूपें] हम कहैत छी, नहि जाउ ओतय।

सरमा—हम ओकरा नेना मे खेलौने छी; मोहिनी क संगे - संग ओ पैघ भेल अछि। तखन त अहाँ ओकरा विषय मे किछु नहि कहलहुँ। एहि पन्द्रह साल मे की एहन.........

राजा—पन्द्रह साल मे बहुत किछु भ' सकैत अछि सरमा। बहुत किछु भ' गेल अछि; बहुत किछु जानलहुँ अछि। तैं जखनहि लूटन क नाम लेलहुँ, मन मे घृणा क आगि पजरि उठल।

सरमा—मुदा, धनिक क की अपराध अछि, से कियैक नहि कहैत छी ?

राजा—[क्रुद्ध भ' कए] धनिक क सब सँ प्रधान अपराध अछि जे ओ लूटन सनक नरक क कीट क बेटा थीक, और लूटन क सब सँ पैघ अपराध अछि जे ओ.........[कहैत - कहैत विकृत मुखें चुप्प भ' जाइत छथि।]

सरमा—की !

राजा—[प्रस्थान करत - करैत] नहि, किछु नहि।

[मंच अन्हार भ' जाइछ।]

द्वितीय अंक

प्रथम दृश्य

[राजा साहब क कक्ष : कलाकारिता - पूर्ण पुरान ढंग क सामान सब सजाओल छैक। अल्पालोक मे कनेक चिन्तित मुद्रा मे राजा बैसल छथि। विरंचि हुनका किछु समभा रहल छथि।]

विरंचि—सरकार, सबटा जमाखर्च त अहाँ कें द' देलहुँ। एखन एक बेर देखि लेल जाय।

राजा—रहै दीय' दीवान जी! अहाँ क हिसाब हम कहियो देखलहुँ जे आइ देखब? तकर अलावे अहाँ एखन जे किछु पढ़ि गेलहुँ, से सब हम नहि सुनलहुं। हम किछु दोसरे बात सोचि रहल छलहुँ।

विरंचि—कोन बात सरकार?

राजा—आइ तीन दिन सँ पन्नाबाई बिलासपुरे मे अछि। अहाँ जनैत छी?

विरंचि—जी हँ, धनिक लाल महफिल बैसौने अछि।

राजा—दीवान जी, अहाँ जनैत छी जे पन्नाबाइ जहिया अबैत अछि, हमरा एतय अबैत अछि।

विरंचि—मुदा.........

राजा...पहिने हमर प्रश्न क उत्तर दीयह। अहाँ जनैत छी?

विरंचि...हँ सरकार। किन्तु पूजा क एखन दस दिन बाकी अछि आ'......

राजा...[किछु कठोर स्वरें] दीवान जी!

विरंचि...[कहैत - कहैत थम्हि कए] जी सरकार!

राजा...काल्हि क भीतर नाच घर कें सजा कए साफ करवा कए राखू।

[कहैत - कहैत प्रस्थानोद्यत भ' कए] परसू पन्नाबाइ क महफिल राजमहल मे बैसत।

विरंचि—किन्तु सरकार, हमर बात त सुनल जाय।

राजा—[प्रस्थान-पथ क पास सँ पाछाँ घुरैत] कहू !

बिरंचि—[पास जा कए] मालिक, पूजा क त कैक दिन बाकी छैक।

राजा—जनैत छी।

विरंचि—सब किछु कीनल जा चुकल अछि। मूर्त्तियो समाप्तप्राय भ' गेल अछि। आ एम्हर शहर मे जा कए अपनेक आज्ञानुसार एकटा नाटक क दल कें पाइ सेहो बैना द' कए एतय आनबाक व्यवस्था क' लेने छी।

राजा—[पाछाँ घूमि कए] सेहो जनैत छी।

विरंचि—[राजा क दिसि असहाय आँखियें ताकैत] सरकार, हमरा पास जे किछु छल, सब किछु साफ भ' गेल अछि ताहि मे।

राजा—अहाँ कें जे कहबाक छल, भ' गेल ?

विरंचि—जी ? [हताश स्वरें] जी हँ......

राजा—मकान क बाकी हिस्सा कें सेहो गिरबी राखि कए जतबा टाका मिलत, ल' आनू। [जाइत-जाइत] और हँ, नाचघर साफ करबा लियह।

[राजा क प्रस्थान। अन्हार भ' जाइछ।]

—

द्वितीय दृश्य

[राज-भवन क अन्तःपुर]

विरंचि—एखन कहू त रानी जी, हम कोना कए ई काज करू ? नहि, नहि, हमरा सँ ई नहि हैत। हम बहुत सहलहुँ, किछु नहि कहलहुँ। सब जमीन-जाल जखन महाजन सभक चपेट मे गेल, तखनहुँ किछु नहि बाजलहुँ। मुदा, सम्पूर्ण राजमहल कें गिरवी राखबाक अर्थ—आब एकदम किछु नहि रहत।

सरमा—हम अहाँ कें की कहू दीवान जी ? अहाँ त बाबू जी क समय सँ छी। सब त देखितहि छी। एक बेरि जे बस्तु जाइत अछि, से घूरि कए थोढ़बे आबैत अछि ?

विरंचि—और, एहि मे भेंटबे कतेक करत ? आधा मकान बन्हकी रखबाक जे सूदि भेल अछि, तकरा धुरैबाक आइ धरि व्यवस्था नहि भेल अछि। से बाद द' कए महाजन और देबे की करत ?— किछु नहि।

सरमा—हम सब त आत्महत्या क' लेब। किन्तु मोहिनी ? मोहिनी की करत ? ओकर त एखन धरि बियाहो नहि क' सकलहुँ जे.........

[कहैत-कहैत आँखि मे नोर आबि जाइत छन्हि।]

विरंचि—आ' हुनका त एहन अवस्था क विषय मे किछु कहलो नहि गेल छन्हि। एकटा परीक्षा द' कए आयल छथि। मुदा फाइनल परीक्षा त एखनहु बाकिये छन्हि। छुट्टी क बाद त ओ फेरो जाय चाहतीह। तखन हम कोन मुँहें कहब जे हमरा पास आब किछु नहि अछि।

सरमा—एहि मे अहाँ क कोन दोष ? सब हमर कर्म क लिखल अछि। एखनहु और की की देख' पड़त, नहि जानि।

[मंच अन्हार भ' जाइत अछि।]

तृतीय दृश्य

[उद्यान क दृश्य। मंचक सम्मुख भाग मे एक कोन मे राखल वेदी पर मोहिनी बैसल अछि। पाछाँ शुभंकर ठाढ़ छथि। चारूकात सँ पक्षी सभक कलरव सुनल जाइत अछि। आलोक मात्र ओही दुनू गोटा पर पड़ैत अछि।]

शुभंकर—ट्रूली स्पीकिंग, अहाँ सभ क ई बिलासपुर हमरा सहुत नीक लागि गेल।

मोहिनी—[हाथ झुका कए नह खोधैत] हूँ।

शुभंकर—हूँ की? ऐम आइ रांग?

मोहिनी—नहि। [कहि कए आँचल पर हाथ फेरै लगैत छथि।]

शुभंकर—[सामने आबि कए] लुक मोहिनी, अहाँ एना चुपचाप बैसि कए हूँ-नहि करैत रहब आ' हम......की भेल अहाँ कें?

मोहिनी—हैत की? अहाँ हमर गाम क प्रशंसा करैत छलहुँ, हम सुनैत छलहुँ।

शुभंकर—अहाँ कि मात्र सुनबाक लेल हमरा एतय ई पोखरिक पास बजौने अयलहुँ?

मोहिनी—जी हँ।

शुभंकर—तखन कहू, की सुनै चाहैत छी?

मोहिनी—अहाँ गाम क विषय मे त बहुत किछु कहलहुँ, गाम क लोक सब द' त किछु नहि बाजलहुँ।

शुभंकर—गाम क लोक सब बहुत नीक छथि।

मोहिनी—बस?

शुभंकर—तखन आर की कहू हुनका......... [किछु सामझि कए] ओ! आब बुझलहुँ अहाँ क प्रश्न।

मोहिनी—[मुँह टेढ़ करैत] हूँ, खूब बुझलहुँ।

शुभंकर—गाम क आन सब लोग सँ कयो - कयो आरो नीक अछि, आरो सुन्दर—हमर सपनों सँ सुन्दर.........

[कहैत - कहैत अगुअबैत अछि ।]

मोहिनी —[शुभंकर कें पाछाँ धकेलि कए, उठि कए] जाउ; अहाँ कें कनेक छूट दीय' त अहाँ.........

शुभंकर—[हँसि देत अछि] हमर कहब बेजाय लागल हैत थोड़बे ? मने-मन त अहाँ इयैह सुनै चाहैत छलहुँ । कहू, ठीक कि नहि ?

मोहिनी—बुझलहुँ । अहाँ सभ क मन क बात जानि जाइत छी ।

शुभंकर—सभ क नहि त अहाँ क मन क बात त अवश्ये जनैत छी ।

[मोहिनी पछुआ जाइत छथि । मंच क पश्च भाग पर आलोक पसरि जाइत अछि । एक टा पथ नजरि अबैत अछि ।] और जतबा क जानबा मे बाकी अछि, से कोहबर क राति क लेल छोड़ि दैने छी ।

मोहिनी—[लजा कए] धत ! अहाँ बड़ निर्लज्ज छी—असभ्य जकाँ ।

शुभंकर—[प्रसंग बदलैत] से त हम छीहे । [पाछाँ घूमि कए] कारण, जा धरि कोनो सभ्य देश क डिग्री नहि लटका सकी, ता धरि हमरा सन अध्यापक कें असभ्ये बुझल जाइत छैक ।

मोहिनी—हम से कहलहुँ थोड़े ?

शुभंकर—अहाँ द' नहि कहैत छी । अहाँ क आँखि मे प्रेम क काजर अछि, मुदा दुनिया सैह बुझैत अछि । ओह ! हमरा पास बिलाइत क डिग्री रहितै, त हम थोड़बे कोनो कालेज मे सबा छ' सौ टाका क पद पर सड़ैत रहितहुँ; तखन त—

मोहिनी—अहाँ त कहने छलहुँ जे बैंक मे टाका जमा क' रहल छी ।

शुभंकर—अरे धत् - धत्! पाँच - दस हजार सँ की हैत ? ओतबाक त पासपोर्ट बना कए प्लेन क टिकट क दाम गनैते - गनैत स्वाहा ।

मोहिनी—तखन ?

शुभंकर—और एखन त अहाँ सँ बियाह क' कए तखनहि बाहर पढ़बा लेल

जायब। ताहि लेल चाही और पाइ। दस हजार टाका सँ की हैत ?

मोहिनी—[किछु सोचि कए चलैत - चलैत अकस्मात कहि उठैत अछि] एक टा काज कियैक ने करैत छी ? हम सब त बाबूजी सँ टाका ल' सकैत छी।

शुभंकर—राइट यू आर ! जाहि दिन सँ हम एतय एलहुँ, ताहि दिन सँ इयैह सोचि रहल छलहुँ। सोचलहुँ जे अहाँ कें पूछि ली—त अहूँ कें वैह समाधान सूझल।

मोहिनी—तकर अलावे अहाँ त पहिनहि कहने छलहुँ, अहाँ कें आर किछु नहि चाही।

शुभंकर—उहुँ हुँ हुँ ! अहाँ गलती क' रहल छी। पहिने त हम अहाँ कें चाहै छी।

मोहिनी—[कटाक्ष क' कए] फेर वैह सब बात !

शुभंकर—हम कोन अन्याय कहल ? जौं राज-कन्ये नहि मिलल त आधा राज्यहि ल' कए हम की करब ? खैर, तखन अहीं पर भार रहल। एहि विषय मे अहीं बाबूजी सँ बात क' लेब।

मोहिनी—[हँसि कए] कियैक ? अहीं कियैक ने ?

शुभंकर—नहि बाबा ! हुनका देखितहि हमर कण्ठ सूखि जाइत अछि। आफ्टर ऑल, हम साधारण लोग छी, और ओ छथि राजा।

मोहिनी—तखन हमरा सँ अहाँ कें कियैक नहि डर लगैत अछि ?

शुभंकर—कियैक ? अहाँ सँ कियैक डर हैत ?

मोहिनी—वाह रे ! हम जे राजकन्या छी।

शुभंकर—ओ ! [कहैत उच्च स्वरें हँसि दैत छथि।]

[मंच अन्हार भ' जाइछ]

चतुर्थ दृश्य

[नाच-घर। घर क चीज-बीत सब विस्रस्त रूपें पड़ल अछि। मात्र एकटा झाड़ ऊपर सँ लटकि रहल अछि। दीवान जी आ' खबास अपना मे बातचीत क' रहल छथि।]

बिरंचि—जल्दी-जल्दी हाथ चला रौ।

चतुर—एक बरस क धूरा एहि नाच-घर मे जमल अछि। एक गोटा सँ ई पार लागत ?

बिरंचि—[दुःखपूर्ण कंठें] हँ! एक तोहीं छें जे एहि घर कें नहि छोड़लें। आन क्यो त एतबा दिन मे कत्तहु पड़ा गेल रहतिहै।

चतुर—[काज करैत-करैत] हम कोना पड़ाउ दीवान जी ? जावत धरि सरकार हमरा लाति मारि कए भगा नहि देथि तावत धरि त हम एत्तहि रहब।

बिरंचि—अरे एतय त तोरा पेट भरि खेनाइ धरि नहि भेटैत छौक आ दरमाहा'क त प्रश्ने कोन!

चतुर—दरमाहा हमरा देताह कियैक नहि ? हमहीं कहलहुँ जे हमर त क्यो धीया-पूता अछि नहि; जे हमरा टाका क जरूरत हैत। टाका ल' कए की करितहुँ ? भनहि त टाका जमा भ' रहल अछि।

बिरंचि—[अस्फुट स्वरें] और ओहि टाका क आधा महाजन क संदूक मे आ' आधा पन्नाबाइ क पायल क तर......।

चतुर—किछु कहलहुँ की ?

बिरंचि—कहैत छी जे तों मूर्ख छें। तें रहि गेलें एहि हवेली मे। नहि त...।

चतुर—हम त मूर्ख छी; बुझलहुँ। हमरा दरमहो नहि भेटैत अछि। मुदा, अहाँ कियैक एखनहुँ पड़ल छी दीवान जी ? अहूँ कें त किछु नहि

भेटैत अछि।

विरंचि—हमहूँ तेहने छी, पढ़ल-लिखल मूर्ख !

चतुर—छोड़ू ओ सब मुन्शी जी ! [काज करैत-करैत बजैत अछि] हमर बाबू एहि महल क नोन कम खैलन्हि ? तकरहि दाम हम सब नहि चुका सकलहुँ। तँ, हम भरि जिनगी खटियो कए हिनका सभ क कर्ज नहि उतारि सकब। [काज रोकि कए] तखन, जतबा दिन जिबैत छी, जतबा दिन लिखल अछि ततबा दिन खटबे करब। नहि त नरकहु मे हमर स्थान नहि हैत।

विरंचि—कियैक ?

चतुर—महाराज क माय, बड़की महारानी हमर बाबू जी कें रास्ता सँ उठा कए घर मे राखलन्हि, खुऔलन्हि आ' पोसलन्हि। बाबू जी तखन एक दम छोट बच्चा रहथि। मरबो केर पहिने बाबू जी हमरा सबटा कथा सुनौने रहथिन्ह। [किछु काल ठाढ़ रहि कए फेरो कर्म-रत भ' जाइछ।]

विरंचि—और ओहि वंश क आइ ई हाल ? जे सब आश्रित छल, पंडित, कवि, गायक, कलाकार, गुणी, सब कें एक-एक क' कए जाय पड़लन्हि। सब कें हाथ जोड़ि कए महल सँ बिदा कैल गेल। किन्तु हमरहु सभ क बिदा हैबाक दिन लगिच्चा रहल अछि।

चतुर—से कियैक ?

विरंचि—महल क उत्तर भाग जे पहिने गिरबी राखल गेल छल, तकर सूदे क थाह नहि—असल त दूर जाओक। और जे किछु बाकी छल तकरहु स्वाहा क' कए आबि रहल छी।

चतुर—से की ? ई हाल भ' गेल अछि एहि महल क ?

विरंचि—त कहैत की छियह ?

चतुर—[काज बन्द करैत] तखन ताहि पर ई महफिल कियैक बैसि रहल अछि ?

विरंचि—तैं त तोरा मूर्ख कहैत छियह। ओहि मुजरे क पाछाँ त पूरा महल गेल हाथ सँ।

चतुर—मुदा, पन्नाबाइ क मुजरा त ओहि टोला मे धनिक लाल क ओतय आइ तीन दिन सँ लोग सुनबे कैलक। तखन फेर कियैक ?

विरंचि—नहि बुझलिहीं ? तीन दिन सँ लोग सुनलक—तैं त फेरो भ' रहल अछि एतय। एहि हवेली क पाइ शेष भ' गेलैक अछि, तैं कि अभिमानो समाप्त भ' गेलैक ?

चतुर—हे भगवान्! आबहु सरकार कें सुबुद्धि दियन्हु। एना त आब बेसी दिन नहियें चलत।

विरंचि—इ त तैयो भाग अछि जे जत्तेक सोचने छलहुँ, ताहि सँ बेसी टाका भेंटल अछि।

चतुर—से कोना ?

विरंचि—वैह धनिके क पास गेल छलहुं। ओ त एत्तति खेलायल-धुपायल छल—एहि ठामक सब किछु ओकरा बुझले छैक। आन कोनो महाजन वा बजार पर क साहू सब त एहि हवेली क लेल एकर आधो नहि देतिहै। मुदा, धनिक कें हम सबटा बात समझा-बुझा कए कहलियैक, तखन ओ दस हजार टाका बाहर कैलक।

चतुर—ओ नीक लोक अछि। हम जनैत छी। और सबटा त गिद्ध थीक गिद्ध। सदिखन लुपकबाक लेल तैयार रहैत अछि।

विरंचि—ओकरा त सब बातक पता नहि छलै। जखन हम कहलियैक जे कोना महाजन सूदिक टाका क लेल तगादा क' रहल अछि, तखन ओ बाजल जे एकरा बन्द करबाक एकेटा उपाय अछि।

चतुर—से की ?

विरंचि—वैह रामचन्दर सेठ सँ महल क बाकी हिस्सा क दस्तावेज आदि कीनि लेत। तखन त क्यो तगादा नहि करत।

चतुर—ओह! भरिसक तैं सरकार हमरा आइ दुपहरि क समय धनिकलाल

कें आब' लेल खबर देबै कहलन्हि ।

विरंचि—हम त इयैह सोचैत छी जे चलू, क्यो त हवेली क नीक चाहैवला भेटल अछि ।

चतुर—ई हम अहाँ कें कहि दैत छी दीवान जी, जौं क्यो हवेली क नीक क' सकैत अछि त ओ थीक धनिक लाल ।

[बत्ती मिझा जाइछ ।]

पंचम दृश्य

[मंच-सज्जा सँ राजा साहब क कक्ष उद्‌भासित होइछ। अन्हारे मे दरबाजा दिसि सँ एकटा जीप एबाक आवाज सुनबा मे अबैछ।]

राजा—[उच्च कंठें] चतुर, देख त के आयल।

चतुर—[नेपथ्य सँ] जाइ छी सरकार। [एहि बीच राजा साहब उठि कए अपना कें प्रस्तुत क' लैत छथि। तावत् चतुर धनिक कें ल' कए प्रवेश करैछ।] सरकार, धनिक लाल एलाह। [चतुर क प्रस्थान। राजा साहब पाछाँ घूरल छथि।]

धनिक—गोड़ लगैत छी, सरकार।

राजा—[पाछाँ घूमि कए] हमर उपहास क' रहल छह?

धनिक—[विस्मय क मुद्रा मे] जी?

राजा—[पाछाँ घूमि कए] सुनलहुं तों बहुत मातबर भ' गेल छह, बहुत पाइ जमा कैने छह!

धनिक—[विनय-पूर्वक] सब अपने सभ क आशीर्वाद सँ।

राजा—हुँ! [बैसैत छथि आ तम्बाकू पिबैत छथि।]

धनिक—किछु देर धरि असहाय जकाँ ठाढ़ रहि कए तकर बाद] अपने हमरा बजौने छलियैक?

राजा—[बिना देखनहि] हँ।

धनिक—कहल जाय, कोन सेवा क' सकैत छी?

राजा—[गड़गड़ा क नल मुँह सँ हटा कए] बैसह। [धनिक सामने राखल आसन पर बैसि जाइत अछि। राजा साहब हँसि दैत छथि।] हाय रे जमाना!

धनिक—[नहि सुनैत] जी, हमरा किछु कहलहुँ?

राजा—आइ सँ बीस बरस पहिने तों जतय बैसलह, ततय तोहर बापो बैसबाक साहस नहि कैने छल, जनैत छह ?

धनिक—[हँसैत] जी, मन त नहि अछि, तखन हँ, बूढ़-पुरान तेहने किछु कहैत छथि। मुदा से त बीस बरस पहिलुका.........।

राजा—[बात पर जानि-बूझि कए ध्यान नहि दैत] सुनलहुँ, पन्नाबाइ तीन दिन सँ तोहर दुआरि पर महफिल जमौने छल !

धनिक—जी, हमर बेटा क जनम-दिन छलक।

राजा—तोरा ई गीत सुनबाक शौक कहिया सँ भेल छह ?

धनिक—जी, शौक नहि। तखन, समय भेंटैत अछि त......।

राजा—कालिह सन्ध्याकाल समय हैतह त आबि जैह। कालिह पन्नाबाइ राजमहल मे मुज़रा पेश करत।

धनिक—[आश्चर्य सँ] जी ! राजमहल मे ?

राजा—कियैक ? एहि मे आश्चर्यित हैबाक कोन गप्प सुनलह ?

धनिक—[घबड़ा कए] नहि, माने पन्नाबाइ पहिनहि कहने छल जे ओ आइये शहर घुरि जायत; तैं !

राजा—पन्नाबाइ घुरि जायत ? बिलासपुर सँ ? राजमहल मे बिना ऐने ? [उत्तेजना कें दम्भ सँ दमन करैत] कोना सोचलह ?

धनिक—जी से त ठीके, से त ठीके ! मुदा, एखन पूजा क अनुष्ठान त आबिये गेल अछि। तकर पहिने पन्नाबाइ कें आनबाक खर्च त...।

राजा—[बाधा दैत] एखन तों जा सकैत छह।

धनिक—जी ? [विस्मय। किछु काल बाद] जी !

[बत्ती मिझा जाइछ।]

तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

[महफिल। उपस्थित केवल दीवान जी आ' धनिक लाल। एकटा विचित्र रोशनी बीच सँ चारूकात विकीर्ण होइछ। दू दिसि टूटा बिछौना, मसलन आदि ओछाओल छैक। बीच मे पन्नाबाइ क बैसबाक जगह तैयार अछि। ओतय सारंगी आ' तबला धरल अछि।]

धनिक—मुदा, अहाँ हमरा कहने छलहुँ जे महल क अवस्था एकदम बिगड़ल अछि। संचय क परिमाण प्रायः निःशेष भ' गेल अछि।

विरंचि—हम त ठीके कहने छलहुँ।

धनिक—और तेँ हमहूँ आइ जखन बजार पर गेल छलहुँ तखन राम चन्दर सेठ सँ हवेली क बाकी हिस्सा क विषय मे बातो कैने छलहुँ। किन्तु...।

विरंचि—[बाधा दए] ओ की कहलक ?

धनिक—ओ त साग्रह तैयार भ' गेल। लागल जेना ओकर पिंड छूटि गेल हो !

विरंचि—हैत कियैक नहि ? ओ जनैत अछि जे ओना ओकर टाका घूरि कए आबि नहि सकैत अछि। और सरकार जावत धरि छथि, ओकरा ईहो साहस नहि हेतैक जे कचहरी जायत।

धनिक—असल मे, एहि महल क त एखन कोनो दाम नहि हैत। जे किछु दाम अछि, से एहि जमीन क। नहि त क्यो एहि मकान क लेल टाका थोड़बे देत !

विरंचि—एहि जमीनो क की खूब बेसी दाम हैत ?

धनिक—अवश्य। एक दिन त हैबे करत और ओ दिन बेसी दूर नहि अछि। ओ सेठ त मूर्ख अछि; लैं कइलक आइ-काल्हि, जहिया इच्छा हो, कागत-पत्तर ल' लियह; मात्र टाका टा वापिस आबि जाओक।

विरंचि—[सोचैत] मुदा, सूदि आ' असल मिला कए महल क आधे हिस्सा क जत्तेक ने टाका भ' गेल छैक आ' ताहू पर अहाँ जत्तेक देलहुँ—ततबा कि कहियो एहि जमीन क दाम हैत ?

धनिक—[हँसैत] दीवान जी, अहाँ बहुत सोझ लोक छी। ई दुनिया घूमि रहल अछि स्वार्थ क बल पर। कयो स्वार्थ बिना एको डेग नहि चलैत अछि कत्तहु।

विरंचि—से त बूझल। मुदा अहाँ क ई महल किनबा मे कोन स्वार्थ अछि ? एक ने एक दिन महल नीलाम हैबे करतिहैक । ताहि मे अहाँ कें एतना टाका नहि गनै पड़तिहै। जौं महले किनबाक स्वार्थ हैतिहै, त अहाँ तहिना कीनतहुँ।

धनिक—[मृदु हँसि कए] तखन अहाँ की सोचैत छी जे हम एकदम निः-स्वार्थ भए.........

विरंचि—से हम कतय कहलहुँ ? तखन अहाँ क मन मे एहि महल क प्रति अवश्य कत्तहु स्थान अछि।

धनिक—[कनेक उदास भए] से त ठीके। स्थान अवश्ये अछि—तखन महल क नहि, रानी मा क, जनिक मुख नेना मे हमर बिनु देखल माइ क मुँह सँ एकदम मिलि जाइत छल।

विरंचि—ओ; से बात अछि ?

धनिक—बाद मे महल क दहिन दिस क बड़का हाता मे एक छोट-छीन कारखाना बैसैबाक अछि जतय हजारों लोक काज करै। ई हमर बहुत दिन क सपना थीक।

विरंचि—एहि इलाका मे जौं तेहन एकटा कारखाना भ' जाय त उद्धारे भ' जाय।

धनिक—दीवान जी, दारिद्र्य की थीक से हम देखने छी। हमरा मन अछि जखन वर्षा बरसैत छल, हमर घर क छप्पर मे असंख्य भूर भ' जाइत छल आ' हम गनैत छलहुँ जे कतेक भूर अछि—एक, दू, तीन, चारि, पाँच। सेह गनैत गनैत बड़ भेलहुँ कि हठात् एकदम असहाय भ' गेलहुँ। तखनहि रानी मा अपना शरण मे ल' लेलन्हि। मड़ैया और महल क विपर्यय हमरा मे अनेक रंगीन सपना भरै लागल। हम बुझैत छी जे बिना अर्थ, बिना खाद्य और बिना सपना मनुक्ख कत्तो असहाय भ' जाइत अछि। [स्वर बदलि कए] दीवान जी, अहाँ भार लेब ओहि कारखाना क ?

बिरंचि—नहि धनिक लाल, हमरा सपना नहि देखाउ। एहि महल क अर्थी पर ठाढ़ भए हम......नहि नहि।

[बत्ती मिझा जाइत अछि।]

द्वितीय दृश्य

[राजा साहब क कक्ष । मंच क अग्रभाग मे मद्धिम आलोक क प्रकाश मे मंच क बाम दिसि राखल एकटा वेदी आ' एकटा उच्चासन लखा दैत अछि । वेदी पर अतरदान राखल अछि । आसन पर बैसल राजा साहब अपन मोंछ मे अतर लगा कए अतरदान राखि कए उठैत छथि ।]

राजा—[शोर पाड़ैत छथि] चतुर, चतुर !

चतुर—[नेपथ्य सँ] ऐलाहुँ मालिक !

राजा—जल्दी आबें । [स्वगतप्राय] ओम्हर पन्नाबाइ बैसल हैत महफिल मे । [मदिरा आ' पान-पात्र नेने चतुर क प्रवेश ।] अनलें ? राख ओहि ठाम । [चतुर वेदी पर सब चीज राखैत अछि ।] आ' सुन, महफिल मे ओ सब आबि गेल छथि ?

चतुर—हँ मालिक ।

राजा—ठीक अछि । आ' ओ लूटन क बेटा सेहो आयल अछि ?

चतुर—जी हँ, ओहो आबि गेल छथि । दीवान जी सँ बातचीत करैत छलाह ।

राजा—बेस । तों जो । [चतुर प्रस्थानोद्यत] आ' सुन हमरा द' क्यो पुछतौक त कहि दिहें जे आबै छथि ।

चतुर—अच्छा सरकार ! [निष्क्रान्त भ' जाइछ ।]

[राजा पान-पात्र मे मदिरा ढारि कए पीबा लेल उद्यत होइत छथि । सरमा प्रवेश क' कए शान्त भ' कए देखैत छथि । एक गिलास पीबि कए जखन राजा दोसर गिलास मे मदिरा ढारै छथि, तखन सरमा अगुआ कए आबैत छथि ।]

सरमा— अहाँ कें मन अछि, अहाँ क वयस कतेक भेल अछि ?

राजा—[पाछाँ दिसि घूमि कए] सरमा ? [कहि कए हँसैत छथि]।

सरमा—अहाँ हमर प्रश्न क उत्तर नहि देलहुँ !

राजा—वयस बरस-मास-दिन सँ नहि जोड़ल जाइत छैक सरमा।

सरमा—अहाँ क वयस पचपन पार क' गेल अछि।

राजा—मात्र पचपन ? [हँसैत छथि। किछु नशा चढ़ल छन्हि] हम बुझलहुँ पचहत्तर क आस-पास हैत। से जे हो, मुदा अहाँ हमरहुँ सँ बूढ़ भ' गेलहुँ।

सरमा—अहाँ निसा मे छी।

राजा—नहि रानी; एकर साध्य की जे हमरा नशा आबि जाय ? नशा त संगीत मे आओत, राग-रागिणी क आलाप मे आओत। [कहैत-कहैत प्रस्थानोद्यत होइत छथि।]

सरमा—[पास आबि कए] मुदा अहाँ सँ हमरा बहुत किछु कहबाक छल।

राजा—कहबाक लेल कालिह भरि दिन रहत। एखन हमरा जाय दीय'।

सरमा—[राजा कें रोकैत] नहि, आइ हमर बात अहाँ कें सुनै पड़त।

राजा—[खौंझाइत] आह; सरमा ! की नेनपन आरम्भ कैलहुँ ?

सरमा—[व्यथित स्वरें] अहाँ सदिखन अपनहि इच्छा पर जीबैत छी। मोहिनी सब दिन बाहरे रहैत अछि और एहि बिशाल हवेली मे एक-दिसि हम पड़ल रहैत छी। अहाँ गत दस बरिस मे एकहुँ बेर घूरियो कए ताकलहुँ हमरा दिसि ? कखनहु पुछलहुँ—सरमा, अहाँ कें की चाही ?

राजा—[पाछाँ घुरैत] ओह, एखनहि अहाँ कें कोन वस्तु क प्रयोजन पड़ि गेल ? ठीक अछि, हम दीवान जी कें पठा दैत छी। अहाँ हुनका समझा-बुझा.........

सरमा—[बाधा दैत] नहि; हम दीवान जी सँ नहि, अहाँ सँ चाहैत छी।

राजा—[खौंझाइल] की चाहैत छी ?

सरमा—अहाँ कें चाहैत छी।

राजा—तकर माने ? ई की शुरू कैलहुँ आइ ? साफ - साफ बाजू, की चाही ?

सरमा—अहाँ कि बुझैत नहि छी जे अहाँ जाहि पथ पर चलि रहल छी, ओहि पथ पर ध्वंस छोड़ि आन किछु नहि अछि ? [कनमुँह जकाँ] अहाँ राजा छी। अहाँ कें जगह - जमीन - महल आदि बहुत सम्पत्ति अछि। मुदा हमर एकमात्र सम्पत्ति थिकहुँ अहाँ। हम अहाँ कें एहि निश्चित ध्वंस क पथ सँ घुरबै चाहैत छी।

राजा—[हँसैत] वाह सरमा, वाह! लगैत अछि, आइ पच्चीस बरिस पहिलुका कोनो राति थीक। [गम्भीर भ' कए] अहाँ कत' घूर' चाहैत छी सरमा, हमरा कत' ल' जायब ? [पुनः आसन क पास जा कए पान-पात्र हाथ मे ल' कए] अहाँ सब मरि गेल छी सरमा। [मदिरा ढारैत] अहाँ, दीवान जी, चतुर—सब क्यो। प्रतिपल अहाँ सब मृत्यु क पद-ध्वनि सुनि रहल छी। प्रत्येक मुहूर्त्त अहाँ मरैत छी आगामी मृत्यु क डरें। [पान-पात्र हाथ मे ल' कए उठैत छथि।] जीबाक हो त हमरा संग चलू। [पीबैत छथि।]

सरमा—हम निस्सन्तान रहितहुँ त अपन स्वामी क, अपन सोहाग क भीख अपनहि स्वामी सँ नहि माँगै अबितहुँ। अहाँ कें कखनहु भविष्य क चिन्ता रहैत अछि ?

राजा—के भविष्य क चिन्ता क' कए लाभ उठौलक रानी ? क्यो नहि। अहाँ क पिता कि भविष्य क चिन्ता क' कए हमर हाथ मे अहाँ क हाथ सौंपलन्हिं ? हमर परम पूज्य पितृदेव की हमर भविष्य कें सुदृढ़ बनैबाक लेल नारी, नृत्य आ नग्नता क पाछाँ सबटा सम्पत्ति बहबैत गेलाह ? अहाँ क मोहिनी कि भविष्य क चिन्ता करैत ओहि अध्यापक कें पसिन कैने अछि ? जौं कैनहु हैत त भूल कैलक। भूल कैलक ओ। भविष्य मे पछिलका सब सपना हेरा जायत। जे किछु थीक, जौं किछु अछि से थीक वर्त्तमान! [पान-पात्र कें हाथ मे मरोड़ने] आ' एखन पन्नाबाइ

हमरा लेल प्रतीक्षा क' रहल हैत। [राजा पान-पात्र हाथ मे नेने प्रस्थान करैत छथि। सरमा एसगर मंच पर ठाढ़ कानैत रहैत छथि। बत्ती मिझा जाइछ। अन्हार मे संगीत क सुर भासल अबैत अछि; संग मे सारंगी आ' तबला क सहयोग।]

तृतीय दृश्य

[नाच घर। प्रकाश हैबाक बाद मंच क पश्च भाग पर लखा दैत छथि राजा, धनिक लाल आ' पन्नाबाइ। पन्नाबाइ दर्शक क दिसि पीठ कैने मंच क एकदम अग्रभाग मे गीत गाबि रहल अछि। पन्नाबाइ बहुमूल्य पोशाक मे अछि। ओकर दुनू दिसि सारंगी आ' तबला वादक छथि। गद्दा क एक दिसि राजा आ' दोसर दिसि धनिक लाल बैसल छथि। राजा क पाछाँ दीवान जी ठाढ़ छथि। धनिक लाल क पास आज्ञा क लेल प्रतीक्षा-रत चतुर। गीत क बीच मे प्रकाश बढ़ैत अछि। दर्शक कें पन्नाबाइ क हाथ क मुद्रा देखाइ पड़ैत छन्हि। बीच-बीच मे राजा वाह-वाही दैत पीबैत छथि। राजा राजकीय पोशाक मे छथि। धनिक अधिकांश समय राजा कें देखि रहल अछि। पन्नाबाइ क गीत समाप्त होइछ। राजा दोसर गीत क लेल फरमाइश करैत छथि। गीत चलैते काल टाका आ' अशर्फी क थैला कें अपन आसन लग सँ ठेलि कए पन्नाबाइ दिसि बढ़बैत छथि। पन्नाबाइ ओकर उपेक्षा करैत धनिक लाल क दिसि देखि कए मुसकिया रहल अछि। धनिक लाल भावावेश मे छथि। ई देखि राजा क्रुद्ध भ' जाइत छथि। संगहि हुनक भ्रू-भंग होइत छन्हि। गीत बन्द भ' जाइत अछि।]

राजा—धनिक लाल! [धनिक मूड़ी उठा कए राजा दिसि ताकैत अछि]
ई कोनो बाजारी कोठा नहि थीक जे तों पन्नाबाइ क दिसि......

धनिक—[किञ्चित् मत्त जकाँ] जनैत छी; ई राजमहल थीक। [व्यंग्य]
मुदा, गीत कियैक बन्द भेल ? [घूमि कए] पन्नाबाइ !

राजा—[क्रुद्ध स्वरें] नहि। पन्नाबाइ गीत नहि गाओत।

धनिक—अपने हमरा गीत सुनबाक लेल निमन्त्रण देने छलहुँ कि नहि ?

राजा—हम भूल कैने छलहुँ। हमरा पहिनहि बूझब उचित छल—तों की

बुझनहु राजदरबार क अदब ?

धनिक—[विचित्र जकाँ हँसैत] वाह रे बाह ! हम कोन बेअदबी देखा-ओल ? [हँसैत अछि आ' एकहि वाक्य क पुनरावृत्ति करैछ। उठि कए ठाढ़ होइत अछि।]

राजा—पन्नाबाइ ! अहाँ जाउ, आइ बिश्राम करू। [पन्नाबाइ चलि जाइत अछि। धनिक तकर प्रस्थान-पथ क दिसि देखैत अछि और तकर बाद राजा क दिसि तकैछ। राजा प्रस्थानोद्यत होइत छथि।]

धनिक—[हँसैत] माफ करब महाराज ! [राजा घूरि कए देखैत छथि।] बेचारा हमर प्रश्न बिनु जवाबे क राति भरि जागल रहत। हमर दोष त कनेक कहल जाय जे पश्चात्तापो करी !

राजा—तोरा सँ बातो करैत हमरा घृणा होइत छह ! [कहबाक साथे धनिक कें ई बात लागैत छैक।] ई हमर दुर्भाग्य थीक जे आइ तोहर संग एक आसन पर बैसि कए पन्नाबाइ क मुजरा सुनै पड़ल। जाहि आसन पर ठाढ़ भ' कए तों भाव-बिभोर भ' रहल छह, ओकर एकटा सूतो छूबाक योग्यता तोरा मे नहि छह।

धनिक—[क्रोध कें प्रकट बिना कैने] माफ करब सरकार, ओ त भेल योग्यता क दोष, हमर की दोष अछि ?

राजा—[किछु काल धनिक क दिसि देखैत छथि। तकर बाद टहलैत कहैत छथि।] और ई तोहर असीम भाग्य छह जे आजुक राति बीस साल पहिलुका कोनो राति नहि थीक !

धनिक—से त हमर सौभाग्य क बात कहल गेल सरकार ! मुदा, हमर दोष क बात त नहि कहल गेल !

राजा—धनिक लाल ! हद सँ आगाँ नहि बढ़ी ! तों बिसरि गेलह जे कतय ठाढ़ भ' कए ककरा सँ बात क' रहल छह !

धनिक—[टहलैत] हम किछु नहि बिसरल छी सरकार ! हम एखन बिलासपुर क भूतपूर्व 'राजा' अभिमान कुमार देव सँ बात क' रहल छी

राजमहल क नाचघर क शून्य महफिल मे ठाढ़ भ' कए। [थम्हि कए] और हम ईहो नहि बिसरल छी जे हम एतय निमन्त्रित भ' कए आयल छी और ईहो हमरा स्मरण अछि जे अपने हमरा सँ बात करैत संकोच-बोध करैत छी।

राजा—संकोच नहि घृणा, तीव्र घृणा ! जाहि घृणा क कोनो आदि नहि, अन्त नहि.........

धनिक—[आहत अभिमानें] मुदा, कियैक सरकार ! हम त अपने क दिसि सहायता क हाथ बढ़ौने छी; हाथ बढ़ौने छी अपने क चरण क दिसि—एहि लेल नहि जे अपने जमीदार छलहुँ, एही लेल जे अपने हमरा सँ श्रेष्ठ छी। [स्वर बदलैत] मुदा, अपने हमर बढ़ायल हाथ क आगाँ एकटा दीवार ठाढ़ क' देने छी। कियैक ? हमर कोन दोष अछि ? पन्नाबाइ क दिसि देखला सँ एत्तेक बिशाल देवार नहि ठाढ़ भ' सकैत अछि.........

राजा—बस ! बन्द करह अपन वक्तृता ! हमर सहायता क लेल एतय आयल छह ? [उच्च स्वरें हँसैत छथि।] हम सब किछु जनैत छी, सब किछु बुझैत छी। हम जनैत छी, तों कियैक ऐलह।

धनिक—कियैक ?

राजा—तों ऐलह इयैह देखबाक लेल जे बिलासपुर क भूतपूर्व राजा क रोजत्व कत्तेक बाकी छैक। तों इयैह नापबाक लेल आयल छह जे अपमान क कत्तेक गहीर पोखरि हमर मृत्यु क लेल यथेष्ट अछि। मुदो ई जानि जाह, तोरा सभक ओहि आशा क पूर्त्ति नहि हैतह। हम एखनहु समाप्त नहि भेल छी। तों की हमर सहायता करबह ? तों, जकर बाप क्रहियो हमर पैर क नह क दिसि ताकि कए बात नहि क' सकल ?

धनिक—माफ करब सरकार। बुझलहुँ, हमर ऐनाइ हमर दोष भेल छल। मुदा, ताहि लेल हमर पिता क आत्मा कें कियैक......

राजा—[प्रचंड स्वरें हँसि-हँसि कए] अरे, के कतय छें रौ, सुनैत जो—

धनिक लाल क 'पिता' छल और तकर आत्मो छल !

धनिक—माफ करब सरकार। हमर पिता एक साधारण लोग छलाह और हमहू एकटा साधारण लोग छी। मुदा, तें हुनका ल' कए ठट्ठा कैने हमरा नीक नहि लागत। ओ जेह छलाह, हमर अपन लोग त छलाह, हमर अपन बाबू !

राजा—[और जोर सँ हँसैत, मातल जकाँ] वाह रे लूटन, तोहर जनम सार्थक छौक जे एहन धनिक बेटा पौलें ! [हँसी रोकि कए] धनिक लाल, तोहर मन मे अपन पिता क पितृत्व पर एतेक विश्वास छह— आँय ? [व्यंग्य सँ आँखि बड़-बड़ करि कए देखैत रहैत छथि ।]

धनिक—सरकार, अपने हमरा सँ पैघ छी—अपने हमर पितृतुल्य छी......

राजा—[पुनः हँसैत] पि-तृ-तु-ल्य ! जकर पिता क पता नहि, तकर पितृ-तुल्य छी हम ? [हँसैत रहैत छथि]

धनिक—[उच्च स्वरें चीत्कार करैत] सरकार ! [पास आबि कए हाथ पकड़ि लैत छन्हि] ई अपने की कहि रहल छी ?

राजा—[हास्य क वेग तखनहुँ जारी अछि । हाथ छोड़ा कए] कहबह की ? जे सत्य थीक, सैह कहैत छियह ! मुदा तोरे टा एहन अवस्था नहि भेलह । [कपट दुःख प्रकट करैत] बेचारा लूटन—तों जकरा पिता जनैत छलह ! ओकरा की भरि जिनगी अपन पिता क खोज भेंटलैक ?

धनिक—[प्रचण्ड क्रोधें राजा क हाथ पकड़ि कए चीत्कार करैत-कहैत अछि] सरकार ! बन्द करू, बन्द करू एहि घृणित प्रसंग कें। [राजा क हाथ छोड़ि कए मंच क सामने अगुआ कए दुनू हाथ सँ मुँह झाँपि लैत अछि] ओह ! प्रत्येक शब्द जेना धीपल, लाल लोहाक सुलफा हो। [पाछाँ घूमि कए] के कहलक अपने कें ई सब बात ? तकर नाम कहू......।

राजा—[प्रत्येक शब्द क धीरे-धीरे उच्चारण करैत] तकर नाम सुनि कए की हैतह ? ओकर नाम क सन्धान करह जकर खून सँ तोहर देह क

प्रत्येक अंग पवित्र भ' रहल छह !

धनिक—के थीक ओ ? [राजा कें निरुत्तर देखि हुनक हाथ पकड़ि कए] कहू ओ के छल ?

राजा—हाथ छोड़ह । [धनिक छोड़ि दैत अछि हुनक हाथ] बेचारे लूटन क माय—सुनैत छी, बहुत सुन्दर छल—ओकर दुर्भाग्य !

धनिक—हँ हँ, हुनका की भेलन्हि ?

राजा—हैतिहन्हि की ? जे होइत अछि, जे हैबाक चाही—सैह भेल। हमर पितृदेव महाराज मदनेश्वर देव क नजरि पड़ल हुनका ऊपर। बस ! पवित्र भ' गेलीह।

धनिक—[मुँह झाँपि लैत अछि] ओह ! की लज्जा ! की घृणा ! —हमर समस्त शरीर मे पापक स्पर्श ! ओह ! एहि उच्छिष्ट जिनगी सँ त मृत्युए नीक अछि।

राजा—आ हा हा ! [सान्त्वना देबाक भंगिमा मे] बेचारा ! मरबह कियैक ? तोहर त आइ आनन्द क दिन छह—तों जानलह जे तोहर खून क स्रोत मे किछु बिलासपुर क राजपरिवारो क दान अछि।

धनिक—[मूड़ी उठबैत] ठीक ! हम कियैक मरब ? हम नहि मरब ! [हँसैत-कानैत] हम नहि मरब ! [कहैत-कहैत प्रस्थान करैत अछि और पुनः घूरि कए अश्रुसिक्त नयन सँ] मुदा सरकार, अपने एत्तेक विराट संवाद देलहुँ हमरा; हम कोना बिसरब महाराज ? हम एकर मोल चुका देब।

राजा—मोल ? तों की मोल द' सकैत छह एहि राजमहल कें ?

धनिक—हम एत्तेक बड़का मोल देब जकर आशा ई विशाल महलो नहि क' सकैत अछि।

राजा—कनेक हमहूँ त सुनी [हँसैत] केहन, कोना, कत्तेक हैत ओकर दाम ?

धनिक—[क्रोध सँ कंठ कठिन भेल छैक] महाराज ! [शुष्क हँसी हँसि

देैछ] ओ मोल कोनो प्रश्न क लेल प्रतीक्षा नहि करैत अछि। ओकर नाम थीक प्रतिशोध और प्रतिशोध शुरू भ' गेल अछि पहिनहि, हमरहु सँ बिना पुछनहि।

राजा—प्र - ति - शो - ध ? [हँसैत छथि।]

धनक—हँसू नहि महाराज! अपने क हँसी क शब्द जाहि देवार सब पर आघात करैत अछि—कालिह ओ देवार क पतन हैत। कालिह अहाँ क दम्भ क देवार ढहि जाइत।

राजा—कालिह, आगामी कालिह ? [व्यंग्यात्मक कंठ मे हँसैत] अच्छा ? तों ज्योतिष जनैत छह की ? [स्वर बदलि कए] देवार ढहबाक बाद की-की हैत, कनेक हमर हाथ देखि कए बता त दैह। [हाथ बढ़बैत हँसैत छथि।]

धनिक—ई हँसी अपने कें बहुत महग पड़त। एक दिन हम अपने क पोषाक मे ओही ठाम ठाढ़ भ' कए हँसब!

राजा—अहा...हा...हा...हा, एक दिन कियैक—आइये सँ हो!

धनिक—रानी माँ कें हम माता क समान बुझैत छी; तैं, पूजा क समय धरि अपने क अहंकार आ' सम्मान क ऊपर पर्दा टांगने रहब। किन्तु तकर बाद.........

राजा—नहि नहि, ताहि मे त और सात दिन देर भ' जायत। ताहि सँ त नीक हैतह—कालिहये एक बेरि चेष्टा करिह'। कालिह त महफिल मे आबिये रहल छह!

धनिक—नहि महाराज! महफिल हम अपनहि घर मे तीन दिन सुनि चुकल छी!

राजा—ताहि सँ की ? कालिहयो पन्नाबाइ क मुजरा......।

धनिक—माफ करब 'महाराज'! मुजरा सुनबाक सौख अपनहि पूरा करब! हम त साधारण लोक छी—उधार क पाइ सँ महफिल क शान नहि बघारैत छी।

राजा—[क्रुद्ध भ' कए] की ? हम उधार क पाइ सँ ई महफिल लगौने छी ? तोहर एतेक स्पर्धा जे तों.........

धनिक—धीरे सरकार, धीरे। एखनहु सब क्यो नहि जनैत अछि। कियैक सबकें जनबै चाहैत छी ?

राजा—मुदा, तोरा.........तोरा ई-ई सबके कहलकह ? निश्चय दीवान कहने हैतह। हम एखनहि बजबैत छी—(उच्चकंठें) चतुर, चतुर !

धनिक—आ...हा...हा...हा ! एतेक व्यस्त कियैक भ' रहल छी ? एहि मे लज्जा क कोन बात अछि ? सात दिन खूब ठाठ सँ रहू। तकर बाद जखन महल खाली करै पड़त—तखन देखल जेतैक !

राजा—[क्रोधें] कूकी ? म-महल खाली करै पड़त ? तोहर हुकुम सँ ?

धनिक—नहि नहि, हमर हुकुम अपने कोना मानि सकैत छी ? हुकुम त अदालते सँ आओत। [प्रसंगान्तर करबाक अभिनय क' कए अन्य स्वर मे कहैत अछि।] मुदा, ताहि लेल अपने घबड़ाउ जूनि। एखनहु सात दिन समय अछि। काल्हि अहाँ खूब ठाठ सँ महफिल जमाउ ! मुदा, हम नहि आबि सकब; कारण, हमर संदूक क मोहर मारल टाका आन ककरहु हाथें महफिल मे उड़ै—और सेहो हमरहि आगाँ—हमरा नीक कोना लागत; कहू ?

राजा—[गरजैत] धनिक लाल !

धनिक—आ...हा...हा, आस्ते। क्यो सुनि लेत। प्रतिशोध शुरु भ' गेल।
[धनिक प्रस्थान करैत अछि। राजा दुनू हाथ सँ मुँह झाँपि लैत छथि। चारू कात सँ धनिक क स्वर प्रतिध्वनित होमय लगैछ हमर सन्दूक क मोहर मारल टाका...मोहर मारल टाका... मोहर......टाका...... सात दिन खूब ठाठ सँ रहू......सात दिन...... मात्र सात !]

[बत्ती मिझा जाइत अछि।]

—

चतुर्थ अंक

प्रथम दृश्य

[राजमहल क अन्तःपुर]

सरमा—देखू त खबास; पूजा त आबि गेल और अहाँ दिन-राति एसगरे खटि-खटि कए........

चतुर—सब भ' जैतैक, सरकार।

सरमा—देखू ने, एखन धरि.........

चतुर—दीवान जी अपनहि जा-जा कए सब ठाम निमंत्रण-पत्र बाँटि आयल छथि। हँकारो सब कें पड़ि गेल छन्हि।

सरमा—खैर; निमंत्रण सब कें पड़ि चुकल, ई एक बड़का काज भ' गेल अछि।

चतुर—जनैत छी सरकार, एहि बेर गामे टा नहि, समस्त पाली क लोग मुह बौने अछि जे पूजा कहिया आओत।

सरमा—से त सब बेर लोग पूजा लेल बताहुल रहैत आयल अछि।

चतुर—नहि-नहि; सैं नहि। एहि बेर कैक बर्ष क बाद फेरो जे नाटक भ' रहल छैक। कलकत्ता सँ नाटक-मंडली आबि रहल अछि—ई सुनितहि सब आनन्दें अधीर भ' गेल अछि।

सरमा—किन्तु खबास, हमरा त बड़ चिन्ता......

चतुर—सरकार, अपने कें कोनो चिन्ता नहि करबाक चाही। कोनो त्रुटि...

सरमा—नहि खबास, राजा कें मौन और स्थिर देखि कए हमरा भय भ' रहल अछि।

चतुर—हँ; आन बेर कतेक उत्साह सँ सब काज क देख भाल स्वयं करैत

छलाह, किन्तु......

सरमा—ओ त ने चलैत छथि, ने फिरैत छथि, ने प्रसन्न होइत छथि आ' ने क्रोधे करैत छथि।

चतुर—सरकार क उदासी क कारण ईहो भ' सकैछ जे एहि बेर दीवानजी क जिद सँ गुणी-कलाकार तथा पंडित आदि कें विदा क' देल गेलन्हि। तैं......

सरमा—के जाने......!

[तखनहि मोहिनी अत्यन्त चिन्तित मुद्रा मे प्रवेश करैत अछि। चतुर बाहर चलि जाइत अछि।]

मोहिनी—माय।

सरमा...की ? बाज ने।

मोहिनी—एक टा बात छल।

सरमा— हमरा सँ ? शुभंकर त प्रसन्न छथुन्ह ने ?

मोहिनी—हँ !

सरमा—त बाज ने। की कहैत छें ?

मोहिनी—माय, हमरा टाका चाही।

सरमा—टाका ?

मोहिनी—हँ माय ! टाका ! हमरा बीस हजार टाका चाही।

सरमा—बीस हजार !

मोहिनी—हँ माय, बीसे हजार; नहि त हमरा सभ क सम्पूर्ण भविष्य नष्ट भ' जायत। शुभंकर......

सरमा—[बड़बड़बैत] बी...स हजार ! बीस हजार......बीस हजार। भविष्य नष्ट......बीस हजार ! एत्तेक टाका ? ई कोना......? त बेस; बाबू जी कें कहुन्ह। मोहिनी, हम कोना कहियौक जे राजमहल क विशाल तिजोरी मे आब किछु नहि, किछु नहि छौक......।

[तखनहि 'चतुर-चतुर' हाँक दैत राजा साहब प्रवेश करैत छथि।]

राजा—[दुनू कें चिन्ता तथा उद्वेग-युक्त देखि कए] की बात थीक मोहिनी ? दुनू माय-बेटी एतय ? शुभंकर कतय छथि ?

मोहिनी—ओ अपन कमरा मे छथि।

राजा—ओ ! [कहि कए मंच क अन्य भाग दिसि बढ़ैत उद्विग्न जकाँ प्रस्थानोद्यत होइत छथि।]

मोहिनी—[सरमा कें इंगित करैछ, किन्तु ओम्हर सँ किछु उत्तर नहि पाबि स्वयं आगाँ बढ़ैत] बाबू जी !

राजा—[पाछाँ घूरि कए] हँ बेटी।

मोहिनी—[कनेक घबाइत] अपने सँ एकटा बात छल।

राजा—[विस्मित भए] हमरा सँ ?

मोहिनी—जी हँ।

राजा—[पास अबैत सस्नेह] बाजह, की कहबह।

मोहिनी—बात ई थीक... माने... हम माय कें सब किछु कहि देने छियैक।

राजा—हँ हँ; की बात थीक ? साफ-साफ बाजह ने !

मोहिनी—माने.........हमरा किछु टाका चाही...... काल्हिये......बीस हजार टाका।

राजा—टाका ? तों की करबह टाका ल' कए ?

मोहिनी—हमरा......माने हमरा दुनू कें बियाह क बाद एकर आवश्यकता अछि।

राजा—एत्तेक टाका ! किन्तु कोन काज क लेल ?

मोहिनी—ओ विलाइत जाए चाहैत छथि।

राजा—बड़ नीक। [शून्य दिसि देखैत] टाका ! ओ टाका ! किन्तु बीस हजार टाका ?

मोहिनी—हँ, ताहि सँ कम मे त नहियें हैत। तखन बेसी लागने बाद मे ल' लेब।

राजा—मुदा बेटी, एखन त एत्तेक टाका... एकहि संग किछु मोसकिल हैत।

मोहिनी—किन्तु से नहि भेने त......हमरा सभ क सब स्वप्न टूटि जायत।

राजा—स्वप्न टूटि जायत ? किन्तु बीस हजार टाका ? ओफ !

मोहिनी—हमरा सभ क सर्वनाश भ' जायत। हम ककरो मुँह देखैबा जोग नहि रहि जायब।

सरमा—[प्रवेश क' कए आगाँ बढ़ैत] मोहिनी !

मोहिनी—माय, की बीसहु हजार क लेल हमरा लोकनि कें......?

सरमा—मोहिनी, जे तोरा बहुत पहिनहि जानबाक चाही वा जे हमरा लोकनि कें बहुत पहिनहि बता देबाक चाही, से यथार्थ बड़ भयंकर अछि। [किछु कपसैत] तोरा पहिने नहि कहलियौक जे तोरा दुःख पहुँचतौक। मुदा...... [नोर नुकबैत पाछाँ घूमि कए अगुआ जाइत छथि]।

मोहिनी—बाबू जी !

राजा—[पाछाँ घूमि कए अगुअबैत] हँ बेटी।

मोहिनी—की ? हमरा लोकनि क लेल बीसो हजार......?

सरमा—बीस हजार की, बीसो सौ आइ सपना थीक ? सब शून्य भ' गेल अछि। ई बड़का सन्दूक, ई राज, ई राजमहल सब शून्य; सब शून्य!

मोहिनी—[आँखि मे नोर भरि कए] बाबू जी, हम सब की सत्ये आब कंगाल बनि गेल छी ? ई महल, ई ठाठ-बाट, ई महफिल !

राजा—तोरा लेल चेष्टा कैल जा सकैछ......कहुना किछु......।

सरमा—[राजा कें लक्ष्य कए] अहाँ कें ई की भ' गेल अछि ? आब नहि भागू अपना सँ। अहाँ साफ-साफ कियैक ने बाजि सकैत छी जे अहाँ क बिराट तिजोरी एकदम शून्य भ' गेल अछि और अहाँ क जमीन-जगह सब महाजन क सन्दूक मे बन्द भ' चुकल अछि !

मोहिनी—माय ! ई की !

सरमा—[राजा कें] ई कियैक ने कहि दैत छियैक जे ई महलो धरि बन्हकी पड़ि गेल अछि !

मोहिनी—[अश्रु-पूरित नयन सँ देखैत] बाबू जी, ई की ? माथ पर क महल क चादरि सेहो महाजन क हाथ मे आ चुकल अछि ? [राजा कें निरुत्तर देखि] एत्तेक जमीन ! एहन महल ! [सरमा दिसि देखैत] मुदा हमरा पहिने एहि बात क पता कियैक नहि देल गेल ?

सरमा—तोरा पते द' कए की होइत ?

मोहिनी—बहुत किछु भ' सकैत छल। हम पढ़नाइ बन्द क' सकैत छलहुँ और नौकरी क' सकैत छलहुँ।

राजा—थाम्ह ! बिलासपुर क राजकन्या नौकरी करत गे ! और ओहि पाइ सँ हमरा सभ क गुजर चलत ! ताहि सँ त मृत्यु नीक !

सरमा—और जे दिन आबि रहल अछि से कि मृत्यु सँ कम भीषण हैत ?

मोहिनी—ओह ! जौं पता रहतिहै त हम सपना देखब त बन्द करितहुँ।

राजा—एहि मे हमर कोन दोष ? हम की करितहुँ ?

सरमा—किछु नहि क' सकितहुँ, मुदा जे नहि करबाक छल से कियैक कैलहुँ ?

राजा—हम की कैलहुँ अछि ?

सरमा—[आवेश मे] अहाँ राजमहल क बेचि कए महफिल नहि बैसौने छी—अन्तिम सम्पत्ति धरि स्वाहा क' कए एहि बेर पूजा मे नाटक-नाच-गाना क व्यवस्था नहि कैने छी ?

राजा—[आवेश मे] बुझलहुँ; सब हमरहि दोष अछि ! सब हमरहि दोष ! हम की करितहुँ। हम की करू ? लोग सब लग जा कए भिक्षा माँगने फिरू जे हम पूजा करब, हमरा पाइ दे; हमर बेटी पढ़त, हमरा पाइ दे; हमर जमाइ बिलाइत जायत, हमरा पाइ दे; हम मरब, श्राद्ध लेल पाइ दे ! कहू, हम की करितहुँ ?

सरमा—[कानैत] ककरहु कोनो दोष नहि, सब दोष हमर भाग्य क ! [मोहिनी माय कें सान्त्वना दैछ। तखनहि मंच अन्हार भ' जाइछ। झींगुर क झर्र-झर्र। दूर सँ करुण वाद्य-ध्वनि आबि रहल अछि।]

द्वितीय दृश्य

[अन्तःपुर क दृश्य। मंच पर अन्हार पसरल अछि। शुभंकर ब्रीफकेस नेने प्रवेश करैत छथि। मात्र हुनक पैर पर आलोक-पात भ' रहल छन्हि। किछु दूर जाइत ओ पाछाँ घुरि कए देखैत छथि। तखनहि बिजली चमकैत अछि और ठनका जोर सँ ठनकैत अछि। ओ पुनः आगाँ बढ़ि रहल छथि कि तावत् पाछाँ सँ मोहिनी हुनका पर टार्च बारैत छन्हि।]

शुभंकर– [चौंकि कए पाछाँ घुमैत] के ? के छी ओतय ? [अगुआ कए] ओ ! अहाँ !

मोहिनी—[व्यंग्य क स्वरें] कियैक ? निराश भ' गेलहुँ ?

शुभंकर—नहि निराश कियैक हैब ? आश्चर्य मे पड़ि गेलहुँ। अहाँ एसगर एतय......साहस खूब अछि अहाँ कें......!

मोहिनी—पुछलहुँ नहि—कियैक एतय ठाढ़ छी ?

शुभंकर—पुछबाक इच्छा छल। मुदा जखन अहीं कहलहुँ त......

मोहिनी—तखन सुनू। हम एतय ठाढ़ छी आन ककरहुँ साहस क परीक्षा लेबाक लेल।

शुभंकर—परीक्षा लेबाक लेल ? [हँसैत] ककर ? हमर ? नो डीयर, ई त आइ अहाँ मध्ययुगीन नायिका जकाँ बात क' रहल छी।

मोहिनी—अच्छा आब अहाँ कें हम एतबाक प्राचीन, एतबाक पुरान वस्तु लागि लगलहुँ ?

शुभंकर—छुक ! वस्तु त पुरान होइते अछि। जकरा एक दिन पास रखैत छी, दोसर दिन त ओ पुरान हैबे करत। और जे लोक ओही पुरान वस्तु क जड़ि पकड़ि कए रहैत अछि, सेहो पुरान भ' जाइत अछि। ठीक कि नहि ?

मोहिनी—ठीक। अहाँ अपन क्लास क लेक्चर मे ई बात नहि जानि कत्तेक बेरि कहने हैबैक।

शुभंकर—अवश्य। आइ टीच ह्वाट आइ थिंक एण्ड आइ थिंक ह्वाट आइ डू।

मोहिनी—तखन पढ़ौनाइ कियैक नहि छोड़ि दैत छी ?

शुभंकर—नो! डोंट बि सिली मोहिनी। आफटर ऑल टीचिंग इज माइ प्रोफेशन और अहाँ त जनिते छी; हम सेहो छोड़ि रहल छी।

मोहिनी—हँ, नौकरी छोड़ि बिदेश जा रहल छी।

शुभंकर—किन्तु जत्तेक दूर कियैक ने जाउ, अहाँ कें नहि बिसरब मोहिनी।

मोहिनी—अच्छा! हमरा नहि बिसरब? आइ अहूँ मध्ययुग क नायक जकाँ प्रतिज्ञा क' रहल छी।

शुभंकर—ई हमर प्रतिज्ञा नहि थीक, ई हमर वासना थीक।

मोहिनी—और अपन प्रतिज्ञा सब कें छोड़ि कए जे विदेश जा रहल छी तकर की हैत ?

शुभंकर—ककर प्रतिज्ञा, केहन प्रतिज्ञा? आधुनिक मनुष्य कोनो प्रौमिस नहि करैत अछि मोहिनी।

मोहिनी—एकर बाद अहाँ कहब—आधुनिक मनुष्य प्रेमो नहि करैछ। सेह कि नहि ?

शुभंकर—राइट यू आर! देयर इज नो वर्ड लाइक लव। प्रेम नामक शब्द कत्तहु नहि अछि मोहिनी। ओ एक एहन शब्द अछि जकर अहाँ व्यवहार क' सकैत छी, नहियो क' सकैत छी। दैट इज ऐबसौल्यूटली ऑप्शनल।

मोहिनी—तखन गत आठ मास सँ अहाँ क संग हमर सम्पर्क छल तकरा की कहब? हम कोन नाम ल' कए आगाँ क दिन सब बितायब ?

शुभंकर—दैट वॉज एडजस्टमेंट डियर एण्ध नॉट लव; नॉट एट ऑल। हम अहाँ क मित्र छलहुँ, एखनहुँ बन्धु छी! बिलीव मी।

मोहिनी—विश्वास हमरा करै पड़त शुभंकर। बिश्वासे ल' कए त बाकी जिनगी बितायब।

शुभंकर—अहाँ क महल, अहाँ क ई गाम बहुत, बहुत सुन्दर अछि मोहिनी। एत्य त कयो अपन जिनगी बिता सकैत अछि।

मोहिनी--हम त जिनगी बितायब। मुदा अहाँ कि और चारि दिन नहि बिता सकलहुँ ?

शुभंकर—ताहि सँ कोनो अन्तर नहि हैतिहै। की भेद छैक—आइ वा कालिह?

मोहिनी—तखन आइ घूरि चलू—प्लीज। हम अनुरोध करैत छी, हम प्रार्थना करैत छी।

शुभंकर—आह, डोंट बि सिली मोहिनी। नेनपन जुनि करू। आइ घूरि जैने की हैत ?

मोहिनी—कालिह भोर माँ कें अपन मुँह देखा सकब। नहि त......

शुभंकर—लुक मोहिनी ! हम रही वा नहि, भोर हैवे करत।

मोहिनी—अहाँ कियैक नहि बुझैत छी जे अहाँ क एखन एतेक राति कें चलि गेने लोक हमरा की कहत ? हमर प्रेम क लोक कतेक दूर धरि विश्वास करत ? कहत—ओ सब बनाओल कथा छल। शुभंकर हमर अहाँ क सपना क अपमान हैत। अहाँ नहि जाउ।

शुभंकर—अहाँ क धारणा सत्य नहि, हम चोर जकाँ पछुआरि सँ नहि भागि रहल छी। गेल छलहुँ सामने सँ, ऐलहुँ सामने सँ—अहाँ क बाबू जी सँ बिदा ल' कए।

मोहिनी—मुदा एहन की भ' गेल जे अहाँ पूजा क दू दिन पहिनहि चलि जा रहल छी ?

शुभंकर—दू दिन में बहुत किछु होइत छैक मोहिनी ! दू दिन मे हम बहुत आगाँ बढ़ि सकैत छी और दू दिन एतय रहबाक अर्थ थीक दू दिन पछुआ जायब। और अहाँ त नीक जकाँ जनैत छी जे हम पछुआयल रहैवला मे सँ नहि छी।

मोहिनी—एहि दू दिन मे अहाँ की करब शुभंकर ? बहुत टाका कमायब ? जिनगी क दोसर कोन पथ क सन्धान पायब एहि दू दिन मे ?

शुभंकर—पथ छोड़ू मोहिनी, हमरा आब समय नहि अछि।

मोहिनी—समय नहि अछि ? हमरो लेल नहि ?

शुभंकर—अहाँ जौं टाका क जोगाड़ क' सकी तखन......

मोहिनी--टाका सँ की हैत शुभंकर ? टाका सँ अहाँ की नापैत छी ?

शुभंकर—बहुत किछु हैत। एखनुका प्रति मुहूर्त कें निश्चिन्त करबाक लेल, आगामी दिन क प्रत्येक सुख पर कब्जा करबाक लेल टाका क दरकार अछि। ई दुनिया जनैत अछि मोहिनी, [कनेक ठिठकि कए अगुआवैत] जौं टाका हो त हमर डेरा क पता बुझले अछि, आबि सकैत छी।

मोहिनी—हमं......हम चेष्टा करब। मुदा हमर एतबा टा बात मानू। कालिह् पूजा थीक; कालिह् टा......

शुभंकर—बात कें दोहराउ जुनि मोहिनी। हमरा देर भ' रहल अछि। हमरहुँ पूजा करै पड़त, हमर पूजा हमर जीवन क, हमर भविष्य क निश्चिन्तता, हमर पूजा, हमर टाका......!

[तखनहि मंच पर अन्हार भ' जाइछ]

तृतीय दृश्य

[अभिमान कुमार एसगरे मंचपर उच्चासन क पास पाछाँ घूमि कए पान-पात्र सँ मदिरा ढारि रहल छथि। केवाड़ी पर कराघात क शब्द सँ मुख पर खिन्नता क छाप आबि जाइत छन्हि। पाछाँ सँ बहुत मद्धिम स्वरें पन्नाबाइ क गीत सुनल जाइछ। तखनहि पूजा क ढोल-ढाक बाजै लगैछ। धीरे-धीरे ओहो विलीयमान भ' जाइछ।]

राजा—के ? [उत्तर नहि पाबि] चतुर, चतुर ! देख त के आयल ?

विरंचि—[निःशब्द भावें प्रवेश कए] हम, हम छी सरकार ! विरंचि।

राजा—ओ ! [मदिरा-पान करैत] की कहब ? कहू ! आइ अहाँ क सब किछु हमरा नीक लागत। [हँसि कए] कारण, आब कोनो संवाद बाकी नहि अछि, ने बाकी अछि कोनो टा सम्पत्ति, जे अहाँ हमरा आन दिन जकाँ चौंका देब।

विरंचि—हम, हम कोना कहू जे......।

राजा—जे की ?

विरंचि—सर्वनाश भ' गेल अछि मालिक।

राजा—[बिस्मित जकाँ] भ' गेल अछि ? खैर [हँसि कए] तखन की हैत ?

विरंचि—[सरमा कें प्रवेश करैत देखि] रानी जी, सर्वनाश भ' गेल अछि। धनिक अदालत सँ डिगरी ल' कए मकान दखल करै आबि रहल अछि।

सरमा—के धनिक ?

विरंचि—हम कत्तेक समझौलहुँ बुझौलहुँ, मुदा ओ मानिते नहि अछि।

राजा—[पुनः मदिरा ढारैत] सुनल रानी जी ! अपने क राज्य [पान करैत] चलि गेल !

सरमा—[पास आबि कए] अहाँ, अहाँ की छी ? [शराब क पात्र ल' लैत छथि।]

राजा—कियैक ? बिलासपुर क भूतपूर्व राजा अभिमान कुमार देव...... मुदा अहाँ एखन एतय कियैक ?

सरमा—अहाँ कें त किछु खबरि नहि, होश नहि, एम्हर......

राजा—अहाँ कोन सर्वनाश क संवाद सुनायब रानी ! कहू, कहि कए त देखू जे चौंका सकैत छी वा नहि !

सरमा—शुभंकर चलि गेल अछि। मोहिनी कालिह सँ जलग्रहण धरि नहि कैने अछि।

राजा—नहि भेल रानी। ईहो कोनो नव संवाद नहि भेल। शुभंकर हमरहि सामने सँ गेल अछि। और मोहिनी ? [हँसैत] बुद्धिमती अछि; सब जनैत-बुझैत अछि। कालिह जें करै पड़तिहैक से आइये कियैक नहि करत ?

सरमा—भगबान क सप्पत; अहाँ किछु त करू। [कनैत] अहाँ, अहाँ कनैत कियैक नहि छी ? [राजा कें चुपचाप ठाढ़ देखि कए] अहाँ किछु करू, कानू, हँसू, भगबान कें गारि दियौक, किछु करू। अहाँ कें एहन पाथर सन देखि कए हमरा डर लगैत अछि। [कनैछ]

राजा—डर ? डर कथीक रानी ? हमर नोर सुखा गेल अछि। एखन कोनो

दुःख दुःख नहि, वेदना वेदना नहि, कष्ट कष्ट नहि अछि। एखन त हम प्रतीक्षा क' रहल छी।

सरमा—ककरा लेल ? धनिक लाल क लेल ?

राजा—[म्लान हँसी]देखैत छी, के अबैत अछि पहिने, धनिक वा मृत्यु !

सरमा—छी-छी ! एहन जुनि बाजू ! अहाँ कियैक मरब ?

राजा—कियैक बाँचब ?

सरमा—हमरा लेल, मोहिनी क लेल।

राजा—अहाँ दुनू क हाथ ध' कए भीख माँगबाक लेल ? जे हाथ एक दिन हजारो लोक कें भिक्षा देने अछि, अहाँ चाहैत छी जे ओ भीख माँगे ?

सरमा—कियैक ? भाइ साहेब क पास जा सकैत......

राजा—अहाँ क भाइ साहेब क पास ? इयैह कहबाक लेल जे आब हम अहाँ क प्रतिपालन नहि क' सकैत छी ?

सरमा—हे भगवान ! बन्द करू; बन्द करू ई सब बात।

राजा—हँ सरमा, ई सब बात बन्द करी। हम सब, सब क्यो मिलि कए एकटा सपना देखी सरमा ! अन्यथा अहाँ जाहि दिसि देखब, मात्र अन्हार देखाइ पड़त ! मात्र अन्हार ! भीषण बिकराल लोक सब ! हाथ मे गदा और...और सभ क पैर...पैर पर असंख्य नरक क कीट अहाँ कें अश्लील इंगित करत ! ओकरा सभ क मुख मे विशाल गह्वर सब... ताहि मे हमर पिता, हुनक पिता, लूटन, तकर माय......[कहैत-कहैत आँखि विचित्र भ' जाइत छन्हि। सब क्यो हँसत और कहत—"की राजा साहेब" ? [कनेक सँभरैत] तें कहैत छी—हम सब एक सपना देखी!

सरमा—सपना ! केहन सपना ?

राजा—[सचेत भए] हँ सपना ! [हठात् उदास भ' कए] एकटा सपना देखब रानी ? कालिह राति ओहि सपना क आधा देखने छी हम, आधा सपना छूटि गेल छल। हम ओहि सपना कें जोड़ब रानी।

सरमा—कोन सपना ?

राजा—एकटा बिशाल नदी...नहि विराट समुद्र, ताहि पर एक जहाज, एकटा सपना क जहाज, जकरा ऊपर हम, अहाँ आ मोहिनी! समुद्र क ढेव सब ऊपर उछलि-उछलि कए हमरा सब कें छूबै चाहैत छल! हम सब जाहि बन्दरगाह पर गेलहुँ ओतय कोनो मनुष्य नहि, मात्र कंकाले-कंकाल छल, जकरा सभ क देह पर अत्याचार क चिह्न......

सरमा—नहि-नहि! ई सपना नहि भ' सकैछ!

राजा—हँ रानी, हम इयैह सपना देखने छी। हम ओहि कंकाल सब सँ पुछलहुँ—हम के छी? ओ सब कहलक राजा। हमरा ओ सब राजा कहलक, जनैत छी रानी? [राजा आनन्दें अधीर भ' जाइत छथि] तखन हम पुछलहुँ, हम कतय जा रहल छी? उत्तर मे ओ सब दूर क एकटा टापू देखा देलक, सुख क आवरण सँ बेढ़ल एक निर्जन द्वीप। ओ सब कहलक—ओतय राजे टा जा सकैत अछि। तखन हमर जहाज आगाँ बढ़ल। देखलहुँ ओहि द्वीप क चारू कात कादो-पानि पर लाखक-लाख कंकाल ठाढ़ भ' कए भीतर क लीला देखि-देखि इतिहास लिखि रहल छल! और भीतर युधिष्ठिर, रावण, भोज, पृथ्वीराज चौहान, नादिर शाह, सिकन्दर, चन्द्रगुप्त, हरिसिंह देव, लक्खेसराय सब एक पाँती मे ठाढ़! सब एक पाँती मे। देखि कए हमर लालसा, हमर लोभ समुद्र क वेगहुँ सँ बढ़ि गेल। हम तुरत ओतय जैबाक लेल अहाँ कें जहाज पर सँ धक्का द' कए गिरा देलहुँ अहाँ चीत्कार करैत डूबि गेलहुँ। तखन हम मोहिनी कें उठौलहुँ [उत्तेजित भए] और ओकरा दूर टापू क पास फेंकि देलहुँ। ओ कंकाल भ' गेल। आ' तकर बाद हम...हम विलासपुर क राजा साहब हम [तखनहि भयंकर हृदय पीड़ा सँ डगमगाइत छथि।]

सरमा—ई की? अहाँ कें की भ' गेल? ई की?

विरंचि—सरकार!......चतुर, चतुर! डाक्टर......जल्दी!

राजा—[निषेध करैत] नहि डाक्टर नहि! [टगैत-बड़बड़ैत] जहाज... जहाज डूबि गेल रानी। ओ...ओ कंकाल सब लिखलक...जे एक छल राजा! [तखनहि ढाक क शब्द धीरे-धीरे बढ़ि कए तीव्रतर भए पुनः मन्द भ' जाइछ। सर्वत्र अन्धकार, केवल अगिला कोन पर ठाढ़ घोषक पर प्रकाश पड़ैछ।]

घोषक—बहुत आशा छल जे एक नीक नाटक देखाबी, मुदा जे बजौलन्हि सैह राजा जखन नहि रहलाह तखन हम सब ई अभिनय नहि क' सकैत छी। अपने लोकनि सँ प्रार्थना जे हमरा क्षमा करब।

लेखक परिचिति

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'।

संस्कृत, मैथिली, बंगला, हिन्दी, फ्रेंच तथा अंग्रेजी क विशेष अध्ययन।

भाषाविज्ञानक सान्मानिक स्नातक। परीक्षामे प्रथमश्रेणी मे प्रथम स्थान।

साहित्य, संगीत आ' चित्रकला मे विशेष रुचि।

एतावत् प्रकाशित ग्रन्थ—

कवयो वदन्ति (१९६६, मैथिली कविता-संग्रह)

अमृतस्य पुत्राः (१९७१, मैथिली कविता-संग्रह)

नायक क नाम जीवन (१९७१, मैथिली नाटक)

एक छल राजा (१९७३, मैथिली नाटक)

तत्काल, १६२/८०, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता-४५ मे अवस्थिति।

स्थायी निवास—

ग्राम—सहमौरा, पोस्ट—शाहपुर बाजार, जिला—सहर्षा।